www.ghoonghatkibagawat | www.ghoonghatkibagawat | ghoonghatkibagawat37@gmail.com

घूँघट की बगावत

UP/HIN/1999/1282

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित

हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

वर्ष : 25 अंक : 06 | गोरखपुर, 03 अगस्त 2025 रविवार | पृष्ठ : 6 | मूल्य : 2

प्रतीक छाया चित्र

शेर के तीन शावकों की मौत एनीमिया, नमोनिया से हुईः अधिकारी

अमरेली। गुजरात के अमरेली जिले में हाल में मरे शेर के तीन शावकों की पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में एनीमिया और निमोनिया को मौत का कारण बताया गया है। वन विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।

राज्य के वन मंत्री मुलुभाई बेरा ने गत बुधवार को बताया कि शेर के दो शावकों की मौत 28 जुलाई को और तीसरे की 30 जुलाई को हुई थी। इन शावकों को वन अधिकारियों ने लगभग एक हफ्ते पहले अमरेली के जाफराबाद तालुका के कागवादर गांव के पास से बचाया था, जब उनकी मां ने उन्हें छोड़ दिया था। वन्यजीव विभाग के प्रधान मुख्य संरक्षक जयपाल सिंह ने बताया कि इन मौतों के बाद एहतियात के तौर पर उसी क्षेत्र से बचाई गईं तीन शेरनियां और उनके छह शावक स्वस्थ हैं तथा उनमें किसी विशेष संक्रमण के कोई लक्षण नहीं हैं। सिंह ने कहा, ह्यह्यपोस्टमॉर्टम से पुष्टि हुई है कि तीनों शेर शावकों की मौत एनीमिया और निमोनिया के कारण हुई। बचाए गए नौ शेर भी स्वस्थ हैं और उन्हें जल्द जंगल में छोड़ दिया जाएगा। एक शावक में हीमोग्लोबिन का स्तर कम था। खून चढ़ाने के बाद उसका हीमोग्लोबिन का स्तर सामान्य हो गया। वे सामान्य रूप से खाना भी खा रहे हैं।

झगड़ा कांवड़ियों का सीआरपीएफ जवान की हत्या, तीन आरोपी गिरफ्तार

हरियाणा। स्थानीय पुलिस अधिकारी इंस्पेक्टर लाल सिंह ने बताया, कुछ दिन पहले कांवड़ यात्रा के दौरान गाँव के कुछ युवकों का उससे झगड़ा हो गया था। उनकी पहचान कर ली गई है। कृष्ण की हत्या की साजिश कथित तौर पर हरिद्वार तीर्थयात्रा पर जाने से पहले ही रची गई थी। हरियाणा के सोनीपत में 28 जुलाई को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के एक जवान की उसके घर के बाहर गोली मारकर हत्या कर दी गई। कुछ दिन पहले ही हरिद्वार में कांवड़ यात्रा के दौरान अपने ही गाँव के कुछ लोगों के साथ हुए झगड़े में उसका हाथापाई हुई थी। जवान कृष्ण कुमार की हत्या के सिलसिले में तीन आरोपियों को आज गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने बताया कि जवान कृष्ण लगभग 30 साल का था और छुट्टी पर था। सोमवार तड़के घर लौट रहे कृष्ण पर गोली चलाने के बाद दोनों संदिग्ध फरार हो गए।

स्थानीय पुलिस अधिकारी इंस्पेक्टर लाल सिंह ने बताया, कुछ दिन पहले कांवड़ यात्रा के दौरान गाँव के कुछ युवकों का उससे झगड़ा हो गया था। उनकी पहचान कर ली गई है। कृष्ण की हत्या की साजिश कथित तौर पर हरिद्वार तीर्थयात्रा पर जाने से पहले ही रची गई थी। पुलिस ने एक साक्षात्कार के दौरान बताया कि कृष्ण के अलावा, आरोपियों ने आनंद उर्फ पहिया नामक एक और व्यक्ति की हत्या की भी योजना बनाई थी। पुलिस ने हत्या के मामले में निशांत और अजय को मुख्य आरोपी के रूप में पहचाना है। कंवर जाने से पहले, अजय ने अपनी बिना लाइसेंस वाली बंदूक मोहित नाम के एक व्यक्ति के पास छोड़ दी थी। अजय के साथ प्रवीण उर्फ मेंढक भी शामिल था। हत्या में सागर नाम के एक व्यक्ति की कार का इस्तेमाल किया गया था। अजय और निशांत, सागर की कार से खेड़ी दमकन गाँव गए। अजय और निशांत ने घटनास्थल से भागने से पहले कृष्ण की गोली मारकर हत्या कर दी। पुलिस ने कार चालक सागर, प्रवीण उर्फ मेंढक और मोहित को गिरफ्तार कर लिया है। मुख्य आरोपी निशांत और अजय अभी भी फरार हैं। मुख्य आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है। तीनों आरोपियों को अदालत में पेश किया गया और एक दिन के रिमांड पर लिया गया है।

जब पीएम मोदी के सामने बोले सीएम

'यह नया भारत है, दुश्मन के घर में घुसकर खात्मा करने का माद्दा रखता है...'

वाराणसी। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के वाराणसी दौरे के दौरान उनका अभिनंदन किया। इस दौरान प्रधानमंत्री ने लगभग 2,200 करोड़ रुपये की कई विकास परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन किया। इस अवसर पर संबोधित करते हुए, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व की सराहना करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ऐसे समय में काशी पहुंचे हैं जब दुनिया ने ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से भारत की ताकत और संकल्प को देखा है। यह नया भारत है, जिसके पास पहलगाम हमले के दोषियों को सजा दिलाने की क्षमता और साहस दोनों है। पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में हुए सैन्य अभियान ऑपरेशन सिंदूर का जिक्र करते हुए आदित्यनाथ ने कहा, इस नए भारत में आतंक के दोषियों को धूल चटाने और दुश्मनों की सीमा में घुसकर उनका सफाया करने का साहस है। उन्होंने कहा, ह्लऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद आज प्रधानमंत्री मोदी का काशी आगमन हुआ है। उत्तर प्रदेश की जनता की ओर से, मैं प्रधानमंत्री का स्वागत और अभिनंदन करता हूं। मुख्यमंत्री आदित्यनाथ ने कहा कि दुनिया ने ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से भारत की शक्ति व सामर्थ्य का अहसास किया है। उन्होंने कहा कि नया भारत पहलगाम के अपराधियों को मिट्टी में मिलाकर और दुश्मन के घर में घुसकर उसका खात्मा करने का माद्दा रखता है। मुख्यमंत्री ने कहा, ह्लप्रधानमंत्री मोदी दुनिया के सबसे लोकप्रिय राजनेता हैं। पिछले 11 वर्ष में चार दर्जन से अधिक देशों ने उन्हें अपना सर्वोच्च नागरिक सम्मान दिया है। दुनिया लोककल्याण और विश्वकल्याण के लिए उनकी दूरदर्शिता का लोहा मानती है। जुलाई में घाना, त्रिनिदाद-टोबैगो, नामीबिया, ब्राजील ने प्रधानमंत्री मोदी को सर्वोच्च नागरिक सम्मान देकर 140 करोड़ भारतवासियों का गौरव बढ़ाया है।ह्व

अपने लोकसभा क्षेत्र वाराणसी के 51वें दौरे पर, प्रधानमंत्री मोदी ने वाराणसी-भदोही मार्ग और छितौनी-शूल टंकेश्वर मार्ग के चौड़ीकरण और सुदृढ़ीकरण के साथ-साथ मोहन सराय-अदलपुरा मार्ग पर भीड़भाड़ कम करने के लिए हरदत्तपुर में रेलवे ओवरब्रिज का उद्घाटन किया। उन्होंने दालमंडी, लहरतारा-कोटवा, गंगापुर, बाबतपुर सहित कई ग्रामीण और शहरी गलियारों में व्यापक सड़क चौड़ीकरण और सुदृढ़ीकरण तथा लेवल क्रॉसिंग 22सी और खालिसपुर यार्ड पर रेलवे ओवरब्रिज की आधारशिला रखी।

क्षेत्र में बिजली के बुनियादी ढांचे को मजबूत करते हुए, प्रधानमंत्री ने स्मार्ट वितरण परियोजना के तहत विभिन्न कार्यों और 880 करोड़ रुपये से अधिक लागत के बिजली के बुनियादी ढांचे को भूमिगत करने की आधारशिला रखी।

योगी आदित्यनाथ ने कायम किया एक नया कीर्तिमान

- राज्य के सबसे लम्बे समय तक मुख्यमंत्री पद पर रहने वाले बने पहले नेता
- योगी ने तोड़ा पं. गोविंद बल्लभ पंत का रिकार्ड
- योगी आदित्यनाथ यूपी के 22वें मुख्यमंत्री होने के साथ, गोरक्षनाथ मठ के महंत भी

लखनऊ। यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक नया कीर्तिमान बनाया है। वह राज्य के सबसे लंबे समय तक मुख्यमंत्री पद पर बने रहने वाले पहले नेता बन गए हैं। उन्होंने पहले मुख्यमंत्री रहे पंडित गोविंद बल्लभ पंत का रिकॉर्ड तोड़ा है। योगी आदित्यनाथ अब तक 8 साल और 132 दिन का कार्यकाल पूरा कर चुके हैं। गोविंद बल्लभ पंत का कुल कार्यकाल (स्वतंत्रता से पूर्व सहित) 8 साल और 127 दिन का रहा था। योगी आदित्यनाथ ने 19 मार्च, 2017 को मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। 2022 में वे लगातार दूसरी बार सीएम बने। योगी आदित्यनाथ उत्तर प्रदेश के 22वें मुख्यमंत्री हैं। वे गोरखनाथ मठ के महंत भी हैं। वे पहले ऐसे मुख्यमंत्री हैं जिन्होंने पूर्ण कार्यकाल के बाद दोबारा लगातार पद संभाला है। योगी आदित्यनाथ ने 1998 में 26 वर्ष की उम्र में गोरखपुर लोकसभा सीट से चुनाव जीतकर राजनीति में कदम रखा था। वे देश के सबसे युवा सांसदों में शामिल थे। वह लगातार पांच बार गोरखपुर से लोकसभा पहुंचे। योगी आदित्यनाथ का राजनीतिक सफर 1998 में शुरू हुआ। मुख्यमंत्री पद पर रहते हुए योगी आदित्यनाथ ने कई भ्रांतियों को तोड़ा है। उनके सीएम बनने से पहले कहा जाता था कि जो मुख्यमंत्री नोएडा का दौरा करता है वह दोबारा मुख्यमंत्री नहीं बन पाता। पहले की सरकारों में अगर नोएडा में किसी विकास परियोजना का शुभारंभ करना होता था तो लखनऊ में बैठकर ऑनलाइन कर दिया जाता था। योगी आदित्यनाथ ने इस परंपरा को तोड़ा और अब तक वे नोएडा का दौरा कई बार कर चुके हैं। पहले कार्यकाल के बाद अब लगातार उनका दूसरा कार्यकाल चल रहा है।

वनमंत्री ने किया रणथम्भौर की मछली लेडी आफ द लेक्स बाघिन को समर्पित स्मारक का अनावरण

विश्व बाघ दिवस पर मछली (टी-16) की याद में स्मारक का लोकार्पण

सवाईमाधोपुर। विश्व बाघ दिवस के अवसर पर वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संजय शर्मा ने मंगलवार को सवाईमाधोपुर के रण्थम्भौर टाइगर रिजर्व की गौरवशाली और विश्वविख्यात बाघिन ह्लमछली (टी-16)ह्व को चिरस्थायी स्मृति देने हेतु जोगी महल गेट रणथम्भौर पर भव्य स्मारक का अनावरण किया। वन राज्यमंत्री शर्मा ने सवाईमाधोपुर जिलेवासियों को विश्व टाइगर दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि रण्थम्भौर टाईगर रिजर्व सवाई माधोपुर की पहचान है तथा इसके संरक्षण एवं संवर्धन के लिए राज्य सरकार संकल्पबद्ध है। उन्होंने कहा कि रण्थम्भौर टाईगर रिजर्व क्षेत्र को आबाद करने में बाघिन मछली (टी-16) की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

उन्होंने कहा कि देश में टाईगर का यह द्वितीय स्मारक है। वन विभाग की ओर से यह स्मारक बाघिन मछली (टी-16) को सच्ची श्रद्धांजलि है। शावको के साथ यह स्मारक, न केवल उसकी महान विरासत को जीवंत करता है, बल्कि रणथंभौर भ्रमण पर आने वाले पर्यटकों एवं त्रिनेत्र गणेश मंदिर के श्रद्धालुओं के लिए वन्यजीव संरक्षण की एक प्रेरणास्पद झलक भी प्रस्तुत करेगा। रणथम्भौर की सबसे प्रसिद्ध बाघिन मछली (टी-16) का जन्म, 1997 में हुआ। वह अपने चेहरे पर मछली जैसी आकृति के कारण यह नाम पाई और वर्षों तक पदम तालाब, राजबाग और मलिक तालाब जैसे झीलों वाले क्षेत्र पर नियंत्रण रखने

के कारण ह्लेडी ऑफ द लेक्सह्व एवं एक विशाल मगरमच्छ को परास्त कर ह्लक्रोकोडाइल किलरह्व भी कहलाई। मछली ने 5 बार शावकों को जन्म दिया और 2004-05 के शिकार संकट के समय रणथंभौर को पुनः आबाद किया। रणथंभौर की वर्तमान बाघ आबादी का एक बड़ा हिस्सा मछली के वंशजों से बना है, जिनमें सुंदरी (टी-17) और ऐरोहेड (टी-84) जैसे नाम शामिल हैं। मछली की ही संतान बाघिन एसटी-2 राजमाता ने अलवर के सरिस्का को आबाद किया। 2016 में लगभग 19 वर्षों की आयु में मछली का देहांत हुआ, जो किसी जंगली बाघिन के लिए अभूतपूर्व आयु मानी जाती है। बाघिन मछली के जीवन पर बनी डॉक्यूमेंट्री "The World's Most FOmous Tiger" को राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। वर्ष 2013 में भारत सरकार ने मछली पर स्मारक डाक टिकट जारी कर उसे राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया। कार्यक्रम के अंतर्गत 107 नवचयनित वन्यजीव गाइड्स को प्रशिक्षण समापन प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए गए। वन्यजीव गाइड खुश बैरवा (विस्थापन श्रेणी) और उमेश सैनी (ईडीसी श्रेणी) को रणथंभौर संरक्षण में उत्कृष्ट योगदान हेतु सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर राज्यमंत्री शर्मा ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार ह्लएक पेड़ मां के नामह्व अभियान के तहत इस वर्ष 10 करोड़ पौधे लगाने का संकल्प लेकर हरियाली को जन आंदोलन बना रही है। यह पहल भविष्य के हरित राजस्थान की नींव बनेगी। खण्डार विधायक जितेंद्र गोठवाल ने गणेश मेले से पूर्व किले परिसर में दीवार निर्माण एवं मरम्मत व परिक्रमा मार्ग की सुरक्षा व्यवस्थाओं पर अधिकारियों से चर्चा कर व्यवस्थाएं सुदृढ़ करने पर बल दिया। उन्होंने बाघ विस्थापन, स्थानीय वन विकास व संरक्षण योजनाओं पर भी सार्थक सुझाव दिए।

कार्यक्रम से पूर्व आलनपुर में रणथंभौर टाइगर रिजर्व की नवीन नर्सरी का उद्घाटन कर वन मंत्री संजय शर्मा, विधायक जितेन्द्र गोठवाल, जिला कलक्टर कानाराम, पुलिस अधीक्षक अनिल बेनीवाल एवं अन्य अतिथियों द्वारा सिन्दूर, अशोक और कदम के पौधे लगाए गए। इस अवसर पर पूर्व विधायक मानसिंह गुर्जर, पीसीसीएफ शिखा मेहरा, एपीसीसीएफ डॉ. राजेश गुप्ता, सीसीएफ अनूप के.आर., डीसीएफ रामानंद भाकर एवं डीसीएफ प्रमोद धाकड़ सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

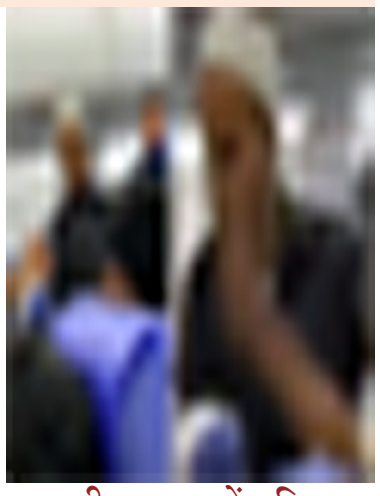

उड़ती फ्लाइट में मुस्लिम शख्स को क्यों पड़ा थप्पड़?

आपने सोशल मीडिया पर वायरल एक वीडियो देखा होगा नहीं देखा तो हम बता देते हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार मुंबई से कोलकाता जा रही इंडिगो की फ्लाइट में एक यात्री ने दूसरे यात्री को थप्पड़ जड़ दिया। क्रेबिन क्रू उस यात्री को आगे की सीट की तरफ ले जा रहे थे तभी उसे थप्पड़ मारा जाता है। वीडियो में ये भी नजर आया कि कुछ अन्य यात्रियों ने थप्पड़ मारने वाले शख्स से नाराजगी भी जताई। क्रू मेंबर्स ने भी इसका विरोध किया। एक यात्री तो यहां तक कहता है कि उसने थप्पड़ क्यों मारा? जिस पर पिटाई करने वाला शख्स कहता है कि ये परेशान कर रहा था। वीडियो के अनुसार थप्पड़ खाने वाले युवक की तबीयत बिगड़ जाती है। कुछ लोगों को ये कहते सुना गया कि उसे पैनिक अटैक आ रहा है। फ्लाइट अटेंडेंट पानी पिलाते हैं और उसे शांत रखने की कोशिश करते हैं।

इंडिगो का इस घटना पर बयान आया है। कहा गया कि हमारी एक उड़ान के दौरान हुई मारपीट की घटना की जानकारी है। इस तरह का अनुशासनहीन व्यवहार पूरी तरह से अस्वीकार्य है और हम किसी भी ऐसी कार्रवाई की कड़ी निंदा करते हैं जो हमारे यात्रियों और क्रू की सुरक्षा और गरिमा से से समझौता करती है। हमारे क्रू ने निर्धारित मानक संचालन प्रक्रियाओं के अनुसार ही कार्रवाई की। संबंधित व्यक्ति को अनुशासनहीन घोषित कर गंतव्य पर पहुंचने के बाद सुरक्षा अधिकारियों को सौंप दिया गया। सभी संबंधित नियामक एजेंसियों को निर्धारित प्रोटोकॉल के तहत सूचित कर दिया गया है। हम अपनी सभी उड़ानों में एक सुरक्षित और सम्मानजनक वातावरण बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

ज्ञानवर्धक सूत्रों के अनुसार, पीड़ित की पहचान हुसैन अहमद मजूमदार के रूप में हुई है, जिसे कोलकाता से सिलचर के लिए कनेक्टिंग फ्लाइट लेनी थी, लेकिन वहां पहुंचा ही नहीं। ऐसा उसके परिवार ने आरोप लगाया। लापता युवक हुसैन अहमद मजूमदार मुम्बई में जिम ट्रेनर है। घटना के समय अपने गृहनगर कटिगोराह जा रहा था। सिलचर हवाई अड्डे पर उनका इंतजार कर रहे उनके परिवार के सदस्य परेशान हैं क्योंकि उनका फोन अभी भी उपलब्ध नहीं है और माना जा रहा है कि वह मुंबई में ही रह गया है।

द केरला स्टोरी के नेशनल अवार्ड जीतने से नाखुश हुए केरल के सीएम

झूठ पर बनी फिल्मः पी विजयन

तिरुवनन्तपुरम। केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने शुक्रवार को 71वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार में 'द केरल स्टोरी' को पुरस्कार देने के फैसले की निंदा की और इसे ₹भारतीय सिनेमा की महान परंपरा₹ का अपमान बताया। सुदीप्तो सेन द्वारा निर्देशित इस फिल्म ने सर्वश्रेष्ठ निर्देशक और सर्वश्रेष्ठ छायांकन (प्रशांतनु महापात्रा के लिए) का पुरस्कार जीता, जिसके बाद केरल सरकार ने कड़ी आलोचना की। 2023 में रिलीज हुई इस विवादास्पद फिल्म को कथित तौर पर तथ्यों को गलत तरीके से प्रस्तुत करने और केरल को सांप्रदायिक रंग में चित्रित करने के लिए व्यापक आलोचना का सामना करना पड़ा था।

एक बयान में, मुख्यमंत्री विजयन ने कहा कि यह फिल्म केरल को बदनाम करने और सांप्रदायिकता फैलाने के लिए झूठ के साथ बनाई गई थी। उन्होंने कहा कि ऐसी फिल्म को सम्मानित करके, पुरस्कार निर्णायक मंडल ने भारतीय सिनेमा की उस महान परंपरा का अपमान किया है जो धार्मिक भाईचारे और राष्ट्रीय एकता के लिए खड़ी है। मुख्यमंत्री ने आगे आरोप लगाया कि यह कदम संघ परिवार के वैचारिक एजेंडे को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि वे सिनेमा को सांप्रदायिक एजेंडे को लागू करने के हथियार में बदलने के संघ परिवार के एजेंडे को लागू कर रहे हैं।

विजयन ने सभी लोकतांत्रिक विचारधारा वाले नागरिकों और मलयाली लोगों से इस घोर अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि देश के हर मलयाली और सभी लोकतांत्रिक आस्था रखने वालों को इस अन्याय के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए।

हमें उस राजनीति के खिलाफ एकजुट होना चाहिए जो कला को सांप्रदायिकता को बढ़ावा देने के हथियार में बदल देती है। इसके अलावा, केरल के शिक्षा मंत्री वी. शिवनकुट्टी ने भी अपनी असहमति जताई। एक्स पर एक पोस्ट में, उन्होंने केरल के विजेताओं–उर्वशी, विजयराघवन और क्रिस्टो टॉमी–को बधाई दी, लेकिन द केरल स्टोरी को पुरस्कार देने के फैसले की आलोचना की।

बाघों के सबसे बड़े घर में सुरक्षा बनी चुनौती

मध्यप्रदेश में चल रहे मानव-बाघ संघर्श और अवैध शिकार एक बड़ी चुनौती बनकर पेश आई है। क्योंकि यह राज्य देश में टाइगर स्टेट कहा जाता है। बाघों की निरंतर बढ़ती संख्या इनके संरक्षण और सुरक्षा के लिए चुनौती बन रही है। अतएव वन विभाग को सुरक्षा के साथ संवेदनशीलता की भी जरूरत है क्योंकि अब इनके आवास और प्रजनन के क्षेत्र केवल बाघों के लिए आरक्षित उद्यान नहीं रह गए हैं। ये अपना क्षेत्र विस्तृत कर रहे है। प्रदेश में वर्तमान में बाघों की संख्या 850 से लेकर 900 के बीच है। उम्मीद की जा रही है कि 2026 में होने वाली बाघ-गणना में 950 से अधिक बाघ प्रदेश के वन प्रांतरों में हो सकते है, लेकिन चिंता की बात है कि राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधीकरण (एनटीसीए) के ताजा आंकड़ों के अनुसार 2025 के छह माह के भीतर 29 बाघों की मौत हो चुकी है। यानी औसतन प्रतिमाह पांच बाघ या तो प्राकृतिक मौत मरे है या फिर पेशेवर शिकारियों ने उनका शिकार किया है। हाल ही में शिवपुरी से लगे ष्योपुर से तीन बाघों की हड्डियों के साथ तीन आरोपियों को स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स ने पकड़ा है। इनमें से एक बाघिन टी-1 शिवपुरी के माधव राष्ट्रीय उद्यान की बताई जा रही है। इस बाघिन की करीब 1 वर्ष से जानकारी नहीं मिल रही है। जबकि इसके गले में आईडी कॉलर डली हुई है। इस मामले में शिवपुरी के उद्यान से लगे ग्राम भीमपुर से पकड़े गए मुख्य आरोपी सोजीराम मोगिया ने स्वीकार किया है कि उसने जहर देकर एक बाघ को मारा है। हालांकि वनसंरक्षक उत्तम षर्मा प्रमाण के अभाव में बाघिन का शिकार करना स्वीकार नहीं कर रहे है, लेकिन बाघिन किस स्थल पर हैं, इसका उनके पास कोई उत्तर नहीं है। सौजीराम का 250 बीघा वनभूमि पर अवैध कब्जा भी है, जो उद्यान की सीमा से लगा है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बाघ परियोजना के 50 साल पूरे होने के अवसर पर कर्नाटक के मैसूर में बाघों की नई गणना रिपोर्ट-2022 जारी की थी। हालांकि यह संख्या और ज्यादा भी हो सकती है, क्योंकि यह गिनती केवल बाघ परियोजना क्षेत्रों में लगे कैमरों में कैद हुए बाघों की, की गई थी। बाघों की यह वृद्धि दुनिया के लिए गर्व का विषय है। यह दुर्लभ प्राणी एक समय लुप्त होने के कगार पर पहुंच गया था, तब 1 अप्रैल 1973 को प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने बाघ परियोजनाओं के जरिए बाघ संरक्षण के मजबूत उपाय किए थे।दुनिया की कुल आबादी के 75 प्रतिशत बाघ अकेले भारत में हैं। देश की सभी बाघ परियोजनाओं में 75000 वर्ग किमी क्षेत्र बाघों के लिए सुरक्षित है। दुनिया का महज 2.4 प्रतिशत भू-भाग हमारे पास है, जबकि जैव-विविधता के संरक्षण में हमारा योगदान आठ प्रतिशत है। भारत की कुल आबादी के करीब 850 बाघ मध्यप्रदेश की धरती पर विचरण कर रहे हैं। इसीलिए अब मध्यप्रदेश ह्रबाघ राज्यह्व (टाइगर स्टेट) कहलाता है। बाघ संरक्षण भारत सरकार और राज्यों की साझा जिम्मेदारी है। संवेदना और सह-अस्तित्व के लिए प्रोत्साहित करने वाली हमारी सांस्कृतिक विरासत ने बाघ परियोजना की सफलता में अहम्-भूमिका निभाई है। इन साझा प्रयासों का ही परिणाम है कि बाघों की संख्या में बढ़ोत्तरी दर्ज की जा रही है।

बीती सदी में जब बाघों की संख्या कम हो गई तब मध्य प्रदेश के कान्हा राश्ट्रीय उद्यान में पैरों के निशान के आधार पर बाघ गणना प्रणाली को षुरूआती मान्यता दी गई थी। ऐसा माना जाता है कि हर बाघ के पंजे का निशान अलग होता है और इन निशानों को एकत्र कर बाघों की संख्या का आकलन किया जा सकता है। कान्हा के पूर्व निदेशक एचएस पवार ने इसे एक वैज्ञानिक तकनीक माना था, लेकिन यह तकनीक उस समय मुश्किल में आ गई, जब ह्रसाइंस इन एशियाह्व के मौजूदा निदेशक के उल्लास कारंत ने बंगलुरु की वन्य जीव संरक्षण संस्था के लिए विभिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों में बंधक बनाए गए बाघों के पंजों के निशान लिए और विशेषज्ञों से इनमें अंतर करने के लिए कहा। इसके बाद पंजों के निशान की तकनीक की कमजोरी उजागर हो गई और इसे नकार दिया गया। इसके बाद कैमरा ट्रैपिंग का एक नया तरीका पेश आया। जिसे कारंत की टीम ने शुरूआत में दक्षिण भारत में लागू किया। इसमें जंगली बाघों की तस्वीरें लेकर उनकी गणना की जाती थी। ऐसा माना गया कि प्रत्येक बाघ के षरीर पर धारियों का प्रारूप उसी तरह अलग-अलग है, जैसे इंसान की अंगुलियों के निशान अलग-अलग होते हैं। यह एक महंगी आकलन प्रणाली थी। पर यह बाघों के पैरों के निशान लेने की तकनीक से कहीं ज्यादा सटीक थी। इसके तहत कैप्चर और री-कैप्चर की तकनीकों वाले परिश्कृत सांख्यिकी उपकरणों और प्रारूप की पहचान करने वाले सॉफ्टवेयर का प्रयोग करके बाघों की विश्वसनीय संख्या का पता लगाने की षुरूआत हुई। इस तकनीक द्वारा गिनती सामने आने पर बाघों की संख्या नाटकीय ढंग से घट गई थी, जो अब बढ़ रही है। हालांकि बढ़ते क्रम में बाघों की गणना को हमेशा पर्यावरणविदों ने संदिग्ध माना है। क्योंकि आर्थिक उदारवाद के चलते बहुराष्ट्रीय कंपनियों को प्राकृतिक संपदा के दोहन की छूट जिस तरह से दी जा रही है, उसी अनुपात में बाघ के प्राकृतिक आवास भी प्रभावित हो रहे हैं। खनन और राजमार्ग विकास परियोजनाओं ने बाघों की वंश वृद्धि पर अंकुश लगाया है। इन परियोजनाओं को प्रचलन में लाने के लिए चार गुना मानव बसाहटें बाघ आरक्षित क्षेत्रों में बढ़ी हैं। नतीजतन मानव और पशुओं के बीच संघर्श बढ़ा है। केंद्र व राज्य सरकारों की नीतियां भी खनन परियोजनाओं को बढ़ावा दे रही हैं। पन्ना में हीरा खनन परियोजना, कान्हा में बॉक्साइट, राजाजी में राष्ट्रीय राजमार्ग, तड़ोबा में कोयला खनन और उत्तर-प्रदेश के तराई वन क्षेत्रों में इमारती लकड़ी माफिया बाघों के लिए जबरदस्त खतरा बने हुए हैं। इसके बावजूद खनिज परियोजनाओं के विरुद्ध बुलंदी से आवाज न राजनीतिकों की ओर से उठ रही और न ही वन अमले की तरफ से ? हां वन अमले की बर्बरता और गोपनीयता जरूर वैसी ही बनी चली आ रही है, जो फिरंगी हुकूमत के जमाने में थी। अंग्रेजों से विरासत में मिली इस शैली में बदलाव अभी तक वन अमला लाया नहीं है। इस कारण बाघों की मौतें भी बढ़ रही हैं। जबकि राष्ट्रीय उद्यानों, वनकर्मियों और वन आंवटन में निरंतर वृद्धि हो रही है। प्रत्येक आरक्षित उद्यान को 20 से 26 करोड़ रुपए दिए जाते हैं। आशंकाएं तो यहां तक हैं कि बाघों की संख्या बढ़ा-चढ़ाकर इसलिए बताई जाती है, ताकि इनके संरक्षण के बहाने बरस रही देशी-विदेशी धनराशि नौकरशाही का हिस्सा बनती रहे। वर्तमान में चीन में बाघ के अंग और खालों की सबसे ज्यादा मांग हैं। इसके अंगों से यहां पारंपरिक दवाएं बनाई जाती हैं और उसकी हड्डियों से महंगी शराब बनती है। भारत में बाघों का जो अवैध शिकार होता है, उसे चीन में ही तस्करी के जरिए बेचा जाता है। बाघ के अंगों की कीमत इतनी अधिक मिलती है कि पेशेवर शिकारी और तस्कर बाघ को मारने के लिए हर तरह का जोखिम उठाने को तैयार रहते हैं। बाघों की दुर्घटना में जो मौतें हो रही हैं, उनका कारण इनके आवासीय क्षेत्रों में निरंतर आ रही कमी है। जंगलों की बेतहाशा हो रही कटाई और वन-क्षेत्रों में आबाद हो रही मानव बस्तियों के कारण भी बाघ बेमौत मारे जा रहे हैं। पर्यटन के लाभ के लिए उद्यानों एवं अभ्यारण्यों में बाघ देखने के लिए जो क्षेत्र विकसित किए गए हैं, उस कारण इन क्षेत्रों में पर्यटकों की अवाजाही बढ़ी है, नतीजतन बाघ एकांत तलाशने के लिए अपने पारंपरिक रहवासी क्षेत्र छोड़ने को मजबूर होकर मानव बस्तियों में पहुंचकर बेमौत मर रहे हैं।

नया प्रसूता वार्ड : एक माह बाद भी नहीं मिले बेड

देहरादून । उपजिला अस्पताल विकासनगर के प्रसूता वार्ड में बेड की कमी को देखते हुए नया वार्ड बनाया गया था। वार्ड को तैयार हुए एक माह बीत गया है, लेकिन वार्ड में अब तक बेड नहीं लगाए गए हैं। वहीं प्रसूताओं को प्रसव के बाद सामान्य वार्डों में स्थानांतरित करने की समस्या बनी हुई है। उप जिला अस्पताल में रोजाना औसतन पांच प्रसव होते है, लेकिन यहां प्रसूता वार्ड में चार ही बेड हैं। वार्ड में जगह कम होने के कारण एक बेड को बाहर लगाया गया है, हालांकि बेड शीशे से बने चैंबर के भीतर है। प्रसव की संख्या अधिक है। दूसरी प्रसूता को भर्ती करने स्थिति पहले से भर्ती प्रसूता को अस्पताल के पहले तल पर बने सामान्य महिला वार्ड में स्थानांतरित कर दिया जाता है। सामान्य मरीजों के साथ भर्ती रहने के कारण प्रतिरोधक क्षमता की दृष्टि से कमजोर प्रसूता और नवजात के संक्रमण की चपेट में आने की संभावना अधिक रहती है। इसी समस्या को दूर करने के लिए अस्पताल के पहले तल पर एक छह बेड का प्रसूता वार्ड बनाया गया था। करीब एक माह पहले वार्ड के लिए बेड की डिमांड भेजी गई थी, लेकिन अब तक बेड नहीं मिल पाए हैं।

स्तनपान मां-बच्चे दोनों के लिए अनमोल उपहार : डॉ. गीता

देहरादून । दून मेडिकल कॉलेज में शुक्रवार से स्तनपान के प्रति जागरूकता सप्ताह की शुरूआत की गई। मुख्य अतिथि प्राचार्य डॉ. गीता जैन ने कहा कि स्तनपान मां और बच्चे दोनों के लिए प्रकृति का एक अनमोल उपहार है। कठ्होंने कहा कि मां का दूध शिशु के लिए सिर्फ भोजन ही नहीं बल्कि संपूर्ण आहार और सुरक्षा कवच भी है। एमएस डॉ. आरएस बिष्ट ने कहा कि मां के दूध में शिशु के विकास के लिए आवश्यक सभी पोषक तत्व, प्रोटीन, फैट, विटामिन और काबोर्हाइड्रेट होते हैं। डॉ. अशोक कुमार ने बताया कि मां के दूध मे एंटीबॉडी होती हैं जो शिशु को निमोनिया, दस्त, कान के संक्रमण और अन्य बीमारियों से बचाती हैं। इसे शिशु का पहला टीका भी कहा जाता है। कार्यक्रम का संचालन निधि काला ने किया। क्कार्यक्रम में नर्सिंग छात्रों ने स्तनपान के फायदे पर नाटक मंचन किया। बालरोग विशेषज्ञ डॉ. गौरव माखीजा, डॉ. तन्वी, डॉ. आयशा, डॉ. बनीता, डॉ. पूजा, महेंद्र भंडारी आदि मौजूद रहे।

प्रेमचंद की समकालीनता विषयक संगोष्ठ संपन्न

प्रेमचंद सर्वसमाज के लेखक, उनकी संवेदना आज भी उतनी ही प्रासंगिक : डॉ. शत्रुघ्न सिंह

देवरिया। बीआरडी पीजी कॉलेज में कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की जयंती पर 'प्रेमचंद की समकालीनता' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. शत्रुघ्न सिंह, सहायक आचार्य, भगवान महावीर पीजी कॉलेज, फाजिलनगर, कुशीनगर ने कहा कि प्रेमचंद सर्वसमाज के लेखक हैं, वे समाज में संवाद के माध्यम हैं। किसानों, मजदूरों, दलितों, महिलाओं और पिछड़े वर्गों के लिए जिस संवेदना के साथ उन्होंने लिखा, वह आज भी उतनी ही सजीव है। उन्होंने कहा कि जैसे कबीर ने जातिवाद, वर्ण-व्यवस्था और सामंती सोच पर तीखा प्रहार किया था, वैसे ही प्रेमचंद ने अपनी कहानियों, उपन्यासों और लेखों के माध्यम से सामाजिक विकृतियों को उजागर किया। गोदान के पात्र धनिया और होरी का उदाहरण देते हुए उन्होंने प्रेमचंद की लेखनी को समयातीत और अत्यंत प्रासंगिक बताया।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्रेमचंद के चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्पार्चन के साथ हुआ। आयोजन सचिव एवं हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्योत कुमार सिंह ने बीज वक्तव्य में प्रेमचंद व तुलसीदास की जयंती को एक साथ याद करते हुए उनके साहित्य की वर्तमान समाज में उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. पी. एन. सिंह ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि साहित्य हमें आत्मचिंतन व समाज की समझ प्रदान करता है। प्रेमचंद साहित्य के युगद्रष्टा हैं, उनकी रचनाएं आज भी प्रेरणास्रोत हैं।ह उन्होंने गोदान, कर्मभूमि, रंगभूमि जैसे उपन्यासों और 'नमक का दरोगा', 'लाल फीता', 'इस्तीफा', 'मंदिर और मस्जिद' जैसी कहानियों को आज की पीढ़ी द्वारा पढ़े जाने की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. भावना सिन्हा ने किया, जबकि धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अभिषेक तिवारी ने किया।

फर्जी एनकाउण्टर प्रकरण : 32 वर्षोंपरान्त मिला न्याय

सात लोगों के फर्जी एनकाउंटर केस में पांच पुलिसवाले दोषी

मोहाली। रानी वल्लाह गांव के सात लोगों, जिनमें चार विशेष पुलिस अधिकारी (एसपीओ) भी शामिल थे, को पुलिस ने अवैध रूप से उठा लिया, उन पर अत्याचार किया और उनकी हत्या कर दी। इन अधिकारियों को आईपीसी की संबंधित धाराओं के तहत आपराधिक षड्यंत्र, हत्या, सबूत नष्ट करने और रिकॉर्ड में हेराफेरी करने का दोषी पाया गया। फैसले के बाद उन्हें हिरासत में ले लिया गया और जल्द ही सजा सुनाई जाएगी।

मोहाली की एक सीबीआई अदालत ने 1993 में तरनतारन जिले में हुई दो फर्जी मुठभेड़ों में शामिल होने के आरोप में एक पूर्व वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) और एक पुलिस उपाधीक्षक (डीएसपी) सहित पंजाब पुलिस के पांच सेवानिवृत्त अधिकारियों को दोषी ठहराया है। जिन लोगों को दोषी ठहराया गया है उनमें पूर्व पुलिस उपाधीक्षक भूपिंदरजीत सिंह (जो बाद में एसएसपी के पद से सेवानिवृत्त हुए), पूर्व सहायक उप-निरीक्षक दविंदर सिंह (जो डीएसपी के पद से सेवानिवृत्त हुए), पूर्व सहायक उप-निरीक्षक गुलबर्ग सिंह, पूर्व निरीक्षक सूबा सिंह और पूर्व एएसआई रघबीर सिंह शामिल हैं। रानी वल्लाह गांव के सात लोगों, जिनमें चार विशेष पुलिस अधिकारी (एसपीओ) भी शामिल थे, को पुलिस ने अवैध रूप से उठा लिया, उन पर अत्याचार किया और उनकी हत्या कर दी। इन अधिकारियों को आईपीसी की संबंधित धाराओं के तहत आपराधिक षड्यंत्र, हत्या, सबूत नष्ट करने और रिकॉर्ड में हेराफेरी करने का दोषी पाया गया। फैसले के बाद उन्हें हिरासत में ले लिया गया और जल्द ही सजा सुनाई जाएगी। सीबीआई की जाँच से पता चला कि सरहाली पुलिस स्टेशन के तत्कालीन स्टेशन हाउस ऑफिसर गुरदेव सिंह के नेतृत्व में एक पुलिस दल ने 27 जून, 1993 को एक सरकारी ठेकेदार के घर से विशेष पुलिस अधिकारी शिंदर सिंह, देसा सिंह, सुखदेव सिंह और बलकार सिंह तथा दलजीत सिंह नामक दो अन्य लोगों को हिरासत में लिया था।

लगातार बारिश...नदियों में गाद आने से चार जल विद्युत परियोजनाएं बंद

देहरादून। पहाड़ में लगातार हो रही बारिश के कारण नदियों की गाद बिजली उत्पादन में बाधा पैदा कर रही है। बुधवार-बृहस्पतिवार की रात नदियों में गाद आने से चार बिजली परियोजनाओं को रोकना पड़ा। इससे रात को अचानक बिजली किल्लत पैदा हुई। हालांकि यूपीसीएल ने अन्य जगह से इंतजाम कर लिया।

यूपीसीएल प्रबंधन के मुताबिक, बृहस्पतिवार की रात 12 बजे से दो बजे तक छिबरो और खोदरी प्रोजेक्ट बंद रहे। छिबरो से 200 मेगावाट और खोदरी से 90 मेगावाट बिजली मिलती है। इसी प्रकार धरासूं रात के 12 बजे से सुबह के 7:30 बजे तक और मनेरी में रात के 12 बजे से सुबह के 8:30 बजे तक बंद रहे। धरासूं से यूपीसीएल को 299 मेगावाट और मनेरी से 90 मेगावाट बिजली मिलती है।

रात को 12 बजे चारों परियोजनाओं से कुल 679 मेगावाट बिजली यूपीसीएल को मिलनी बंद हो गई। इसके बाद यूपीसीएल ने तत्काल अन्य माध्यमों से बिजली का इंतजाम किया। यूपीसीएल के निदेशक परियोजना अजय अग्रवाल का कहना है कि कहीं भी इस दौरान बिजली कटौती नहीं की गई। उन्होंने बताया कि कुछ नदियों में अचानक सिल्ट की मात्रा बढ़ने के बाद यूजेवीएनएल अपनी मशीनों को सुरक्षित रखने के मद्देनजर बंद कर देता है। सिल्ट की मात्रा घटने के साथ ही उत्पादन दोबारा शुरू कर दिया जाता है।

प्रज्वल रेवन्ना को उम्रकैद की सजा

बेंगलुरु स्पेशल कोर्ट ने लगाया 11 लाख रुपये का जुर्माना

बेंगलुरु। बेंगलुरु स्थित जनप्रतिनिधियों की विशेष अदालत ने गत दिनों 18 जुलाई को बलात्कार मामले की सुनवाई पूरी कर ली थी और अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था। जिसके बाद आज सजा का ऐलान किया गया। पूर्व जेडीएस सांसद प्रज्वल रेवन्ना को बलात्कार के मामले में आजीवन कारावास और 11 लाख रुपये का जुर्माना की सजा सुनाई गई है। होलेनरसीपुरा ग्रामीण पुलिस स्टेशन में उनके खिलाफ बलात्कार का मामला दर्ज हुआ था। बेंगलुरु स्थित जनप्रतिनिधियों की विशेष अदालत ने 18 जुलाई को बलात्कार मामले की सुनवाई पूरी कर ली थी और अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था। जिसके बाद आज सजा का ऐलान किया गया।

प्रज्वल पूर्व प्रधानमंत्री और जेडी(एस) के संरक्षक एचडी देवेगौड़ा के पोते हैं। रेवन्ना के खिलाफ बलात्कार और यौन उत्पीड़न के चार मामले दर्ज हैं, लेकिन 1 अगस्त को जिस बलात्कार के मामले में उन्हें दोषी ठहराया गया, वह 48 वर्षीय एक महिला से संबंधित है, जो कर्नाटक के हासन में उनके परिवार के गन्निकाडा फार्म हाउस में घरेलू सहायिका के रूप में कार्यरत थी। 2021 में कथित तौर पर उसके साथ दो बार बलात्कार किया गया था और आरोपी ने इस कृत्य का वीडियो भी बनाया था। इससे पहले पूर्व सांसद प्रज्वल रेवन्ना ने शनिवार को बेंगलुरु की एक विशेष अदालत द्वारा बलात्कार के एक मामले में दोषी ठहराए जाने पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए दावा किया कि उन्होंने कुछ भी गलत नहीं किया। पूर्व सांसद ने कहा कि उनकी एकमात्र गलती राजनीति में तेजी से आगे बढ़ना था, क्योंकि उन्होंने अदालत से कम सजा की मांग की थी। रेवन्ना कथित तौर पर अदालत के समक्ष रो पड़े, क्योंकि उन्होंने आरोप लगाया कि जिन महिलाओं ने उनके खिलाफ शिकायत की थी, उन्हें अभियोजन पक्ष ने जानबूझकर आगे लाया था और उन्होंने ऐसा करने के लिए अपनी इच्छा जाहिर नहीं की थी।

लोक दृष्टिः प्रेमचंद और तुलसीदास विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

तुलसीदास और प्रेमचंद, दोनों ही साहित्यकारों ने समाज को दिशा देने वाला साहित्य रचा : डॉ. आर.पी. तिवारी

महराजगंज। जवाहरलाल नेहरू स्मारक पीजी कॉलेज, महराजगंज में हिंदी विभाग द्वारा गोस्वामी तुलसीदास एवं मुंशी प्रेमचंद की जयंती के अवसर पर लोक दृष्टिः प्रेमचंद और तुलसीदास विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की शुरूआत अतिथियों के स्वागत से हुई, जिसके बाद हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. राणा प्रताप तिवारी ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि तुलसीदास और प्रेमचंद, दोनों ही साहित्यकारों ने समाज को दिशा देने वाला साहित्य रचा है। उद्बोधन सत्र में प्रो. उमेश प्रसाद यादव ने तुलसीदास द्वारा राम के चरित्र को सरल भाषा में प्रस्तुत करने की सराहना की, वहीं मुंशी प्रेमचंद के साहित्य में निहित मानवतावादी दृष्टिकोण को समाज को जागरूक करने वाला बताया। समाजशास्त्र विभाग के प्रो. धर्मेंद्र कुमार सोनकर ने प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी कफन के माध्यम से आज के सामाजिक यथार्थ पर प्रकाश डाला। महाविद्यालय के प्राचार्य एवं कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. अजय कुमार मिश्रा ने राम नाम संकीर्तन के वैज्ञानिक पहलुओं पर चर्चा करते हुए कहा कि ₹राम आत्मविश्वास का प्रतीक हैं, और तुलसीदास ने उन्हें जन-जन तक पहुँचाया। संगोष्ठी में संस्कृत विभाग के डॉ. राजू शर्मा ने रामचरितमानस की महत्ता पर चर्चा की, जबकि श्री मृत्युंजय तिवारी ने मानस में वर्णित आदर्श चरित्रों और प्रेमचंद के मानवतावाद की तुलना की। भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, शारीरिक शिक्षा और सैन्य विज्ञान विभागों के आचार्यों - डॉ. दिवाकर सिंह, डॉ. के.आर. यादव, डॉ. गोपाल सिंह, डॉ. मिथिलेश चौधरी, डॉ. छद्दू यादव, डॉ. ज्योत्सना पांडेय, डॉ. नंदिता मिश्रा, डॉ. अशोक कुमार वर्मा, श्री अनिल सिंह, डॉ. आलोक कुमार पांडेय, डॉ. पीयूष कुमार जायसवाल, डॉ. धर्मवीर, डॉ. देवेंद्र कुमार पाठक, डॉ. विनय कुमार खरवार, डॉ. अपर्णा राठी और डॉ. प्राची कुशवाहा सहित अन्य शिक्षकों ने भी तुलसीदास एवं प्रेमचंद के साहित्यिक योगदान पर अपने विचार साझा किए। इस अवसर पर महाविद्यालय के शिक्षक श्री वकील श्रीवास्तव, श्री शिवकुमार गुप्ता, अन्य शिक्षणेत्तर कर्मचारी और बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. विजय आनंद मिश्रा ने किया, जबकि आभार ज्ञापन डॉ. राणा प्रताप तिवारी द्वारा किया गया।

बच्चों में बौनापन : विकराल होती समस्या

लखनऊ। बच्चों में बौनेपन की समस्या विकराल होती जा रही है। केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार, देश के 63 जिलों में पांच साल से कम उम्र के 50% से अधिक बच्चे बौनेपन से ग्रस्त हैं।

इस सूची में सबसे ज्यादा उत्तर प्रदेश के 34 जिलों में बच्चे बौनेपन के शिकार हो रहे हैं, जो चिंता का सबब बनते जा रहे हैं।

केंद्रीय राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर ने संसद में जानकारी दी कि महाराष्ट्र का नंदुरबार जिला 68.12% बौनेपन के साथ पहले स्थान पर है, जबकि झारखंड का पश्चिम सिंहभूम 59.48% के साथ दूसरे और उत्तर प्रदेश का चित्रकूट 59.44% के साथ तीसरे स्थान पर है।

चित्रकूट के अलावा बांदा (59.33%), संभल (56.79%), फिरोजाबाद (56.37%), जौनपुर (54.89%), और हमीरपुर (54.72%) जैसे जिले टॉप 10 में हैं। इसके अलावा बरेली, अमरोहा, सीतापुर, एटा, मुरादाबाद, लखनऊ, रायबरेली, प्रतापगढ़, बाराबंकी जैसे दर्जनों जिले बौनेपन से जूझ रहे हैं।

- चित्रकूट देश में तीसरे स्थान पर
- यूपी के 34 जिलों की गंभीर स्थिति
- 63 जिलों में 50 प्रतिशत से ज्यादा प्रभावित

रिपोर्ट की मानें तो, जून 2025 तक देश भर में 7.36 करोड़ बच्चों का पंजीकरण आंगनबाड़ी और पोषण ट्रैकर पर किया गया है, जिनमें से 7 करोड़ बच्चों की लंबाई और वजन के आंकड़े एकत्र किए गए। इनमें से 13 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के 63 जिलों में 50% से ज्यादा बच्चे बौनेपन से ग्रस्त पाए गए।

उपरोक्त विषय में स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि बच्चों में बौनेपन की वजह केवल भोजन की कमी नहीं, बल्कि यह स्वच्छता, शिक्षा की कमी, मातृ-शिशु स्वास्थ्य सेवाओं की बदहाली, और सामाजिक-आर्थिक विषमता से भी जुड़ा है। इससे बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास पर दीर्घकालिक असर पड़ता है।

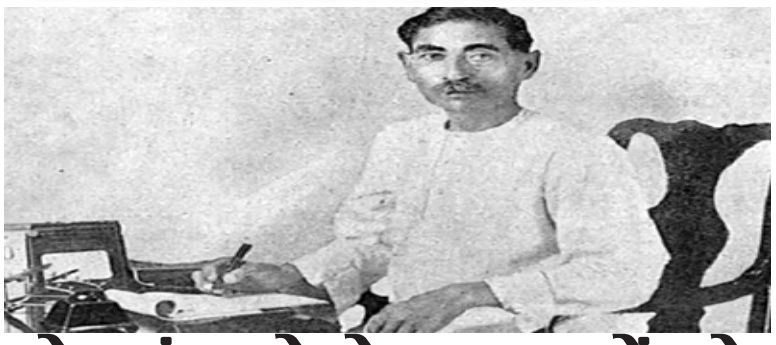

प्रेमचंद को लेकर बहुतों को परेशानी है : कौशल किशोर

लखनऊ। प्रगतिशील लेखक संघ उन्नाव और डॉ रामविलास शर्मा शोध संस्थान की ओर से आयोजित प्रेमचंद जयंती समारोह में कवि, साहित्यकार तथा जन संस्कृति मंच (जसम) के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष कौशल किशोर को प्रेमचंद सम्मान से सम्मानित किया गया। वयोवृद्ध शिक्षाविद राम करण शुक्ला (90 वर्ष) ने उन्हें शाल ओढ़ाकर स्मृति चिन्ह प्रदान किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ अधिवक्ता और लेखक सईद नकवी कानपुर ने की। कार्यक्रम अटल बिहारी इंटर कॉलेज उन्नाव के सभागार में सम्पन्न हुआ। इस मौके पर ह्यआज के समय में प्रेमचंद ह्य विषय पर राष्ट्रीय व्याख्यान सह संगोष्ठी का आयोजन हुआ। मुख्य वक्ता अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर सागर अफराहीम थे। उन्होंने कहा कि मुझसे अक्सर सवाल किया जाता है कि मुंशी प्रेमचंद हिंदी के थे कि उर्दू के। इस बारे में मेरा जवाब है कि वह इंसानियत के पक्षधर थे।

दरअसल वे पुल बनाते हैं और अपने समय में सियासत को आईना दिखाते हैं। उनका साहित्य आज भी आईना है। स्थितियां उस समय से ज्यादा खराब हुई हैं। प्रोफेसर सगीर ने कहा कि संपूर्ण भारतीय साहित्य की भाषाओं में हमारे समाज के जनजीवन को समझने, उनकी रोजमर्रा की दुश्वारियां से रूबरू होने के लिए प्रेमचंद के अलावा कोई दूसरा कहानीकार आज तक नहीं हुआ। उनके व्यापक नजरिए को देखा जाना चाहिए। प्रो सगीर ने प्रेमचंद के अनेक लेख व टिप्पणी जैसे ह्यसाहित्य में घृणा का स्थान ह्य, ह्यजमाना कानपुरह्न, ह्यजंग रूस और जापानह्न, ह्यजर्मनी में यहूदियों पर अत्याचार ह्य आदि की चर्चा करते हुए कहा कि उनके चिंतन में भारत ही नहीं दुनिया के मसायल थे। इसके मूल में आम लोगों की चिंता थी। उनके दुख-दर्द से लगाव था। विशिष्ट वक्ता के रूप में बोलते हुए कौशल किशोर ने कहा कि प्रेमचंद को लेकर बहुतों को परेशानी है। उन्हें सीमित करने या खंडित पाठ करने की कोशिश की जाती है। जरूरत है उनका सामाजिक-राजनीतिक पाठ किया जाना। उनके लिए आजादी केवल राजनीतिक लड़ाई नहीं थी बल्कि सामाजिक सांस्कृतिक रूपांतरण का संघर्ष था। उनमें लगातार बदलाव आता गया। 1930 के बाद उनके सृजन और विचार में उत्कर्ष स्पष्ट रूप से दिखता है।

कौशल किशोर का कहना था कि आजादी के संघर्ष में उनके विचार भगत सिंह के करीब हैं। वहीं सामाजिक दृष्टि में आंबेडकर के। जीवन के अंतिम दिनों में गांधीवाद की सीमाएं उजागर हो गई थीं। इसका उदाहरण तमाम लेख तथा मंगलसूत्र अधूरा उपन्यास है। प्रेमचंद का संघर्ष वर्ण-व्यवस्था, पुरोहितवाद, सांप्रदायिकता, ब्राह्मणवाद आदि से था। डॉ आंबेडकर ने आजादी मिलने पर कहा था कि मनु के शासन की समाप्ति हो रही है। लेकिन आज मनु की वापसी हो रही है। लोकतंत्र के पाए हिल रहे हैं। बलात्कारी सम्मानित हो रहे हैं।

संसद अपराधियों से सुसज्जित हैं। ऐसे में प्रेमचंद के साहित्य और विचार से हमें रोशनी मिलती है। हमें प्रेमचंद के पास जाने, उनसे सीखने-समझने की बहुत जरूरत है। बीज वक्तव्य देते हुए कवि व आलोचक दिनेश प्रियमन ने कहा कि कि प्रेमचंद में हिंदुस्तान के साझेपन का भाव है। वे विभेदकरी कारकों के खिलाफ प्रतिरोध करते हैं। उनके समय से आज क्या बदला है? केवल इनका रूप, इनका रंग। धन, बाजार, सेक्स, हिंसा, विद्वेष, युद्ध, पर्यावरण विनाश जैसी तमाम समस्याओं का इजाफा हुआ है। सवालों को हल करने की जगह सियासत ने उसे बढ़ाया है। शिक्षा नीति के द्वारा पाठ्यक्रम से प्रेमचंद को बाहर करने में हुई। उनके मूल पाठ से भी छेड़छाड़ की जा रही है। कथित विकास के इस भयावह दौर में प्रेमचंद की जरूरत असंदिग्ध है।

कवयित्री जयप्रभा यादव ने प्रेमचंद के कथा साहित्य में नारी चरित्र पर अपनी बात को केंद्रित करते हुए कहा कि स्त्रियों के संबंध में उन्होंने रूढ़िवादी सोच को चुनौती दी है। स्त्री मनोभाव और संघर्ष को विषय बनाया है। धनिया, निर्मला, सुमन, जालपा, सुभद्रा, मालती आदि चरित्रों के माध्यम से स्त्रियों के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को सामने ले आते हैं। वे दब्बू व भीरू नहीं हैं। धनिया और अन्य स्त्री पात्रों का चरित्र इसका उदाहरण है।

इस मौके पर अशोक मिश्र का कहना था कि प्रेमचंद सामाजिक यथार्थ के चितेरे हैं। समाज के मनोविज्ञान को जितनी गहराई से वह पकड़ते और व्यक्त करते हैं, वह अप्रतिम है। अशोक मिश्र ने ह्यगुल्ली डंडाह्न, ह्यदो बैलों की जोड़ीह्न आदि अनेक कहानियों का उदाहरण देते हुए अपनी बात कही। विमल किशोर (लखनऊ) ने कहा कि हिन्दी और उर्दू की साझी परंपरा को आगे बढ़ाना ही प्रेमचंद को सही मायने में याद करना होगा। मंच के आग्रह पर उन्होंने अपनी एक कविता ह्य मांगती है हिसाब जमाने से ह्य सुनाई। पत्रकार महेश शर्मा ने प्रेमचंद के उपन्यास रंगभूमि पर अपने विचार रखे और कहा कि यह वर्ष इस उपन्यास के लेखन का शताब्दी वर्ष है। इसमें जिस विकास की चर्चा है, उसका क्रूर रूप आज देखने को मिलता है। कार्यक्रम का संचालन प्रगतिशील लेखक संघ के संरक्षक डॉक्टर रामनरेश प्राचार्य ने किया । अतिथियों का स्वागत अटल बिहारी इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य अजब सिंह यादव ने किया । इस अवसर पर प्रमुख रूप से नसीर अहमद, आलोक अग्निहोत्री, अखिलेश तिवारी, जब्बार अकरम, संजीव श्रीवास्तव,चंद्रभान चंद्र, पीयूष तिवारी, कमाल दानिश, सरल कुमार, अबरार अहमद, मनीष त्रिपाठी, सौरभ शुक्ला, पीके मिश्रा, सुशील मिश्रा, रघुराज मगन, हेमंत नंदन पंत, आनन्द गौतम आदि मौजूद थे।

भारतीय समाज में कुछ कुसंस्कारी लोग

हमारे देश में अनेकानेक स्वयंभू संत, प्रवचनकर्ता,ज्योतिषी व धर्मगुरु टी वी स्क्रीन की शोभा बढ़ा हैं। ऐसे कई स्वयंभू संत व प्रवचनकर्ता जब कैमरे के सामने प्रकट होते हैं तो उनका साज श्रृंगार,मेकअप उनकी निराली अदाएं सब कुछ देखने लायक होती हैं। ऐसे ही एक कथावाचक व आध्यात्मिक गुरु कहे जाने वाले अनिरुद्धाचार्य का नाम अक्सर किसी न किसी विवाद को लेकर चर्चा में रहता है। रुपहले पर्दे पर नजर आने का शौक रखने वाले अनिरुद्धाचार्य लाफ़्टर शेफ़्स में एक अतिथि के रूप में देखे जा चुके हैं। वे बिग बॉस 18 में शो के ग्रैंड प्रीमियर के दौरान अतिथि के रूप में भी शोभायमान हो चुके हैं। परन्तु वे अपनी कई टिप्पणियों व अंधविश्वास पूर्ण बातों के लिये विवादों में भी रह चुके हैं। कभी कभी शब्दों को तोड़मरोड़कर पेश करने के लिये भी वे हास्य का पर्याय बन चुके हैं। जैसे उन्होंने बिस्किट को विष -की-किट यानी जहर का पैकेट परिभाषित कर दिया। तो कभी पीज्जा में पड़ने वाले चीज (पनीर) को गोंद कहकर उसका मजाक उड़ाते सुने गये। एक बार उन्होंने यह भी कहा था कि - महिलाओं को पीछे की ओर नहीं सोना चाहिए क्योंकि इससे उनके स्तन अशुद्ध हो जाएंगे। एक बार एक टी वी शो के दौरान उन्हें कुछ तार्किक व वैज्ञानिक सोच रखने वाले कुछ शिक्षित लोगों का सामना करना पड़ा। उस समय टी वी एंकर द्वारा उन्हें उनके प्रवचन का वह अंश याद दिलाया गया जिसमें उन्होंने यह कहा था कि गाय के गोबर में से गेंहू चुनचुन कर निकालकर उस गेंहू का पिसा आटा खाने से पुत्र रत्न प्राप्त होता है?

परन्तु पिछले दिनों अपने एक तथाकथित प्रवचन में तो अनिरुद्धाचार्य ने महिलाओं का अपमान करने की सभी सीमायें पार कर दीं। यही महिलाएं जो ऐसे स्वयंभू संतों व प्रवचन कताओं का प्रवचन शुरू होने से पहले सज संवरकर, अपने सिरों पर भारी क्लश रखकर शहर में संतों व प्रवचन कताओं की शोभा यात्रा निकालकर नगर में इनके प्रवचन में भीड़ जुटाने के लिये माहौल तैय्यार करती हैं। यही महिलायें जो इनके प्रवचन में कभी तालियां बजाकर तो कभी नृत्य कर कभी अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर झूम झूम कर इनके समागम में समां बांधती हैं। यहीं महिलायें जो इनके प्रवचन सुनाने अपने पति व अन्य पड़ोसियों को भी साथ लाती हैं। जो इन्हें दान देती हैं,जो रोज सुबह मंदिरों में सबसे पहले पहुँचती हैं। जो महिलायें श्रद्धा पूर्वक मंदिरों व आश्रमों में सेवा करती हैं। इन्हें महिलाओं व उनकी पुत्रियों को लेकर जिस तरह के विकार पिछले दिनों अनिरुद्धाचार्य के मुख से निकले उसने न केवल आम लोगों को बल्कि स्वयं इनके भक्तों को भी आश्चर्य चकित कर दिया। जो शब्द उन्होंने महिलाओं के लिए इस्तेमाल किये शायद इससे अधिक घटिया शब्दों का चयन हो भी नहीं सकता है।

> **जरा सोचिये कि किरण बेदी व कल्पना चावला के देश में जहाँ लड़कियां चाँद पर पहुँचने की होड़ में लगी हुई हैं जिस देश में प्रतिभावान युवतियां सिविल सेवाओं में व डॉक्टर इंजीनियर व उद्यमी बनने की दिशा में आगे बढ़ रही हैं। जहाँ सेनाओं में उच्च पदों पर अपनी सेवाएं देकर देश का गौरव बढ़ा रही हों, उस देश की महिलाओं को यह अशिक्षित रहकर शिक्षा ग्रहण करने की उम्र में शादी रचाने की सलाह देते हैं।**

उन्होंने अपने एक प्रवचन के दौरान कुंवारी लड़कियों की शादी की उम्र को लेकर अत्यंत विवादित व आपत्तिजनक बयान दे डाला। उन्होंने कहा कि लोग विवाह के लिये लड़की लाते हैं पच्चीस साल की। अब 25 साल की लड़की चार जगह मुंह मार चुकी होती है। सब नहीं पर बहुत,और वह पच्चीस साल की जब आती है तो पूरी जवान होकर आती है। जब जवान हो कर आएगी तो स्वाभाविक है कि वह अपनी जवानी कहीं न कहीं वह ,उसकी जवानी फिसल जाएगी। साथ ही उन्होंने 14 साल की उम्र में लड़की की शादी को जायज ठहराया। गौर तलब है कि भारत में बाल विवाह निषेध अधिनियम के तहत इस उम्र में शादी अवैध है। इस बयान के बाद तो गोया पूरे देश में भूचाल सा आ गया। मथुरा में भी महिलाएं व अन्य संगठनों ने इनके विरुद्ध प्रदर्शन किया । जगह जगह उनके पुतले फूंके गये। कई जगह से उनके विरुद्ध महिला संगठनों द्वारा एफ आई आर करने की खबरें सुनीं गयीं। उधर एक बार फर इस विवादित बयान को लेकर भी टी आर पी की दौड़ में जुटे मीडिया समूहों को मसाला खबरें बेचने की सामग्री हासिल हो गयी । अनिरुद्धाचार्य ने अपने बयान को लेकर उपजे विवाद व हंगामे के बाद एक वीडियो जारी कर यह कहा है कि मेरी कुछ बहनें प्रसारित हो रहे वीडियो से आहत हैं। कहना चाहता हूं कि कुछ लड़कियां ऐसी होती हैं कि लिव इन में रहकर चार जगह मुंह मार के किसी के घर जाएंगी, तो क्या वे किसी रिश्ते को निभा पाएंगी। इसलिए लड़की हो या फिर लड़का दोनों को चरित्रवान होना चाहिए। यह कहकर मुआफी मांगनी तो क्या उन्होंने अपनी चार जगह मुंह मारने जैसी सड़क छाप भाषा शैली का फिर से इस्तेमाल किया। शायद वे सोच रहे हों कि बदनाम अगर होंगे तो क्या नाम न होगा ?

जरा सोचिये कि किरण बेदी व कल्पना चावला के देश में जहाँ लड़कियां चाँद पर पहुँचने की होड़ में लगी हुई हैं जिस देश में प्रतिभावान युवतियां सिविल सेवाओं में व डॉक्टर इंजीनियर व उद्यमी बनने की दिशा में आगे बढ़ रही हैं। जहाँ सेनाओं में उच्च पदों पर अपनी सेवाएं देकर देश का गौरव बढ़ा रही हों, उस देश की महिलाओं को यह अशिक्षित रहकर शिक्षा ग्रहण करने की उम्र में शादी रचाने की सलाह देते हैं। गोया एक अनपढ़ मां की परिकल्पना को साकार करने की कोशिश करते हैं? रहा सवाल चार जगह मुंह मारने का तो यह देश का दुर्भाग्य है कि इसी भारतीय समाज में कुछ कुसंस्कारी लोग सभी क्षेत्रों व समाज के सभी वर्गों में हैं जो मुंह मारते रहते हैं। चाहे वह संत समाज ही क्यों हो। जहाँ आज अनेक चरित्रवान त्यागी परोपकारी व धर्मात्मा संत धर्म की रक्षा में लगे हैं वहीँ कुछ मुंह मारने वाले जेल की सजा भी भुगत रहे हैं। कभी कोई संत औरतों को 5-10 बच्चे पैदा करने की सलाह देता है। गोया आसमान की बुलंदी को छूने वाली महिलायें इन जैसों की नजरों में केवल बाल विवाह सामग्री व बच्चे पैदा करने की मशीन मात्र रह गयी हैं? कहना गलत नहीं होगा कि महिलाओं के प्रति ऐसी विकृत मानसिकता रखने वाले स्वयंभू संतों की भक्ति में डूबी महिलायें स्वयं ही अपने अपमान की जिम्मेदार हैं।

निराला शब्द संवाद मच का कवि गोष्ठी का आयोजन

पडरौना, कुशीनगर। हिंदी साहित्य भारती और निराला शब्द संवाद मंच द्वारा आयोजित होने वाले विविध कार्यक्रम व सम्मान समारोह के आयोजन पर-चर्चा उपरान्त उपस्थित साहित्यकारों ने सावन पर अपनी रचनाओं की मधुरिम फुहारों से उपस्थितों को सराबोर कर दिया। कार्यलय अमित मेमोरियल इंटर कालेज अमित नगर में संपन्न हुआ जिसकी अध्यक्षता पूर्व प्रधानाचार्य जीतेन्द्र पाण्डेय तथा संचालन ओम प्रकाश ओम ने किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. सुधाकर तिवारी व विशिष्ट अतिथि डा. गौरव तिवारी हिंदी विभाग बुद्ध पीजी कालेज तथा समीक्षक डाक्टर रामनरेश दुबे आचार्य रहे। डॉ गौरव तिवारी ने दिवंगत डाक्टर अरुणेश नीरन को वैश्विक पटल पर भोजपुरी को लानेवाला पुरोधा बताया। डाक्टर सुधाकर तिवारी ने उनके व्यक्तित्व को समरसता स्

ो ओतप्रोत व्यक्तित्व बताया। उपस्थित साहित्य कारो मे डॉ. मधुसूदन पांडेय, डॉ. गोहन पांडेय, महेशपुरी, अवध किशोर, सुरेन्द्र गोपाल, गोगल यादव, डॉ. रामानुज द्विवेदी, डॉ. माधुरी मधु, डॉ. कालिन्दी त्रिपाठी, श्याम नारायण गुप्ता संतोष संगम, फिरोज अश्क, शम्स शिवानी, हरेन्द्र पाण्डेय, राघव मिश्र, सत्य प्रकाश शुक्ल, सार्थक तिवारी, राणा प्रताप सिंह, पारसनाथ पांडेय, राम नरेश शर्मा शिक्षाक डा. बलराम राय, आत्या राग, आपके भट्ट बावरा, गोंद राय गंवार आदि ने अपनी रचनाओं में गीत, कजरी, गजल के माध्यम से जलवा बिखेरा। आगंतुकों का स्वागत बृजेश तिवारी ने किया।

चुनौतियों से जूझता चाय उद्योग: आईटीए

कोलकाता ! चाय उद्योग कई चुनौतियों से जुड़ा रहा है और वर्ष 2025 में एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है। यह बात चाय बागान मालिकों के संगठन भारतीय चाय एसोसिएशन (आईटीए) ने गत दिनों बुधवार को कही।

अपने एक बयानो में इंडियन की एसोसिएशन - ने कहा कि चाय उद्योग को उत्पादन में कमी मूल्य प्राप्ति में गिरावट आयात की आमद जैसी गंभीर समस्याओं एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। वर्ष 2024 में चाय उत्पादन में उल्लेखनीय कमी देखी गई। और देश में उत्पादन वर्ष 2023 की तुलना में 10.9 करोड किलोग्राम कम हो गया। उत्पादन में 'यह कभी प्रतिकूल मौसम और बगानों में कीटों के हमले कारण हुई है।

संघ के मुताबिक, वर्ष 2025 का खराब उत्पादन स्तर पश्चिम बंगाल और असम के बड़े उत्पादकों के लिए बड़ी चिंता का विषय है। दार्जिलिंग चाय उद्योग भी एक बड़ी चिंता का प्रमुख कारण है। जहाँ उत्पादन वर्ष 2011 के स्तर से 10.34 प्रतिशत पीछे है। 2095 में दैनिक तापमान 140 औसतन दो डिग्री सेल्सियस की शादी और कम वर्षा के कारण शतक परिस्थितियां पैदा हुई हैं। इससे दोनों प्रमुख उत्पादक राज्यों में गिरावट के रूप में दबाव बढ़ रहा है।

'एसोसिएशन के अनुसार जुलाई की फसल भी कम जोर होने की आशंका है जिसमें वर्ष 112024 की तुलना में 15 से 20 प्रतिशत की गिरावट का अनुमान है। उत्पादन में कभी

की पृष्ठ भूमि में, अप्रैल से जुलाई के अंत तक - चाय की नीलामी की कीमतों में गिरावट पायी गई है जिससे अंशधारकों के बीच चिंताएं बढ़ी है। विशेष रूप से सीटीसी और इस्ट-चाय की 11. नीलामी कीमतों में असम मे लगभग सात प्रतिशत और प. बंगाल के दुआर्स / तराई क्षेत्र में' 2.5 प्रतिशत की गिरावट है।

> **2024 और 2025 की शुरूआत में - नाथ के आयात में भारी वृद्धि ने भी कीमतों में गिरावट में योगदान दिया है। वर्ष 2024 में कुल आयात वर्ष 2023 के 245.3 लाख किलोग्राम से 82 -प्रतिशत बंद कर 145.13 लाख किग्रा. हो गया, जिसमें नेपाल और केन्या का योगदान 74 प्रतिशत रहा। वर्ष-2025 में जनवरी से अप्रैल के दौरान कुल-चाय का निर्यात 857.7 लाख किग्रा रहा जो वर्ष वर्ष 2024 की इसी अवधि की तुलना में मामूली कम है।**

कांवड़ में लादकर आत्मा बेच दोगे ?

जो शिक्षा से जले, वही सरकार में बैठे हैं,
यही कारण है कि स्कूल अब श्मशान जैसे हैं।

ये कौन लोग हैं जो शिव के नाम पे नाचे हैं,
नशे में धुत्त, फिर भी खुद को भक्त बताते हैं।

एक बच्चा मरा है 'श्रद्धा' के नाम पर,
और शासन ने उसे 'बलिदान' बताया है।

किताबें राख हो गईं, मंदिरों के लाउडस्पीकरों में,
और सवाल अब देशद्रोह कहलाने लगे हैं।

क्या ऐसे ही तुम श्विश्वगुरुश बनोगे?
या कांवड़ में लादकर आत्मा बेच दोगे?

- डॉ. सत्यवान सौरभ,

जलवायु परिवर्तन का शिक्षा पर सीधा प्रभाव

> **उच्च तापमान के कारण चीन में उच्च स्तरीय परीक्षा कि में बच्चों के प्रदर्शन पर प्रतिकूल असर पड़ा है और हाईस्कूल, स्नातक और कॉलेज प्रवेश दर दोनों में कभी आई है।**

नई दिल्ली। अत्यधिक गर्मी के सीधे संपर्क में आने से बच्चों की स्कूली शिक्षा में 1.5 साल तक की कभी आ सकती है। क्योंकि जलवायु परिवर्तन का शिक्षा पर सीधा प्रभाव पड़ रहा है और हाल के दशकों में कई शैक्षणिक उपलब्धियों पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। एक नई वैश्विक रिपोर्ट के माध्यम से ऐसी जानकारी दी गई है। जलवायु संबंधी कारक - जैसे गर्मी, जंगल की आग, बाढ़, सूखा, बीमारियां, तूफान, समुद्र का बढ़ता जब स्तर शिक्षा के परिणामों को प्रभावित कर सकते हैं। रिपोर्ट के अनुसार - ज्यादातर निम्न और मध्यम आय वाले देश हर साल जलवायु संबंधी तराने का सामना बार रहे हैं जिससे शिक्षा का नुकसान और स्कूल छोड़ने की संभावना बढ़ जाती है। यूनेस्को की वैश्विक शिक्षा निगरानी टीम जलवायु संचार एवं शिक्षा निगरानी एवं मूल्यांकन परियोजना और कनाडा के सस्केचवान विश्वविद्यालय द्वारा संकलित रिपोर्ट में उस बात का उल्लेख किया गया है कि पिछले 20 साल तथा मौसम की घटनाओं के कारण कम से कम 75 प्रतिशत समय में स्कूल बंद रहे, जिससे 50 लाख या उससे अधिक लोग प्रभावित रहे। भीषण गर्मी के संपर्क में आने से बच्चों के शैक्षिक परिणामों पर भी गंभीर रूप से हानिकारक प्रभाव पड़ता है।

वर्ष 1969 और 2012 के बीच 29 देशों ने जनगणना और जलवायु संबंधी आंकड़ों को जोड़ने वाले विश्लेषण बताते हैं कि- गर्भ में रहने और प्रारंभिक जीवन काल के दौरान औसत से अधिक ताप मान के संपर्क में आने का संबंध, विशेष रूप से स्कूली शिक्षा के दक्षिण-पूर्व एशिया में स्कूली शिक्षा के वर्षों में कमी आने से जुड़ा है। रिपोर्ट के अनुसार - औसत से दो डिग्री अधिक तापमान का सामना करने वाले बच्चे के लिए यह अनुमान लगाया जाता है कि-औसत तापमान का अनुभव करने वाले बच्चों की तुलना में- उसे डेढ़ वर्ष कम स्कूली शिक्षा मिलेगी।

आदिवासी संस्कृति, विरासत और स्वदेशी रीति-रिवाज विषयक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

जनजातीय ज्ञान प्रणालियां हमारे लिए अतीत की स्मृति नहीं, भविष्य के लिए एक दिशा : थावरचंद गहलोत

बेंगलुरू। आदिवासी सांस्कृतिक विरासत को संग्रहालयों तक सीमित रखने के बजाय शिक्षा, नीति निर्धारण और सामाजिक विकास के केन्द्र में लाया जाना आवश्यक है। यह विचार कर्नाटक के राज्यपाल थावरचंद गहलोत ने बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती समारोह के अंतर्गत माउंट कार्मल कॉलेज के सहयोग से आईस-ीएसएसआर द्वारा आयोजित आदिवासी संस्कृति विरासत और राष्ट्रीय सम्मेलन में व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि जनजातीय ज्ञान, प्रणालियां हमारे लिए केवल अतीत की स्मृति नहीं बल्कि भविष्य के लिए एक दिशा है। भारत में 700 से भी ज्यादा मान्यता प्राप्त आदिवासी समुदाय हैं। इन समुदायों की संस्कृति, भाषाएं गीत, नृत्य, लोक कथाएं, सामाजिक व्यवस्थाएं और जीवन शैली विविधतापूर्ण भारत की सुंदरता को दशार्ती है। और मानव सभ्यता के सबसे प्राचीन ज्ञान की संवाहक हैं। उन्होंने आयोजन के मूल विषय पर चर्चा करते हुए कहा कि - आदिवासी श्रद्धांजलि श्रंखला के अंतर्गत आयोजित आदिवासी संस्कृति, विरासत और स्वदेशी रीति-रिवाज अत्यंत समसामयिक एवं प्रासंगिक है। जल, जंगल और जमीन के रक्षक बिरसा मुंडा ने भारतीय आदिवासी समाज को स्वाभिमान, संगठित प्रतिरोध और संस्कृति का पुनरुत्थान का मार्ग दिखाया है। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया और 'आदिवासी समाज के स्वाभिमान को पुनर्स्थापित किया। उनके नेतृत्व में उलगुवान क्रांति एक सांस्कृतिक सामाजिक और आध्यात्मिक आंदोलन भी थी। वे सांस्कृतिक स्वराज के अग्रदूत थे। उन्होंने भारत की आदिवासी' परम्पराओं, भाषा, आस्था और जीवन शैली को बचाने के लिए संघर्ष किया। उन्होंने अपनी बात जारी रखते हुए कहा कि- हमारे आदिवासी समुदाय हजारों वर्षों से इस धरती पर संतुलित सहअस्तित्व का एक अद्भुत उदाहरण रहे हैं। लोक गीतों और कथाओं में निहित पर्यावरण, इतिहास, त्योहारों, मान्यताओं और ज्ञान प्रणालियों के साथ उनके संबंधों का आज तेजी से बदलती इस दुनिया में भी गहरा अर्थ है। बांस लकड़ी, घास मिट्टी, आदि से बनी दैनिक उपयोग की वस्तुओं से लेकर वन आधारित कृषि, जैविक खाद के उपयोग और वृक्ष की नोक तुलसी, गिलोय, सलाई महुआ जैसी औषधियों के ज्ञान तक आदिवासी समाज की स्वदेशी प्रथाएं केवल परंपराएं नहीं है, वे जीवन जीने के तरीके हैं। स्वदेशी का अर्थ केवल स्थानीय उत्पादन ही नहीं बल्कि आत्मनिर्भरता, आत्म सम्मान और प्रकृति के साथ संतुलन भी है।

घूँघट की बगावत

03 अगस्त 2025

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित
हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

4

उधम सिंह: लंदन की अदालत में भारत की गरिमा का नाम

भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई केवल तलवारों की टंकार या जुलूसों की गूंज नहीं थी, वह उन आंखों में पलते संकल्पों की लड़ाई थी, जो वर्षों तक प्रतिशोध को अपनी आत्मा में पाले रही। वह उन लोगों की कहानी थी, जो नारे नहीं लगाते थे, लेकिन भीतर ही भीतर एक ज्वालामुखी की तरह उबलते रहते थे। उन ज्वालाओं में से एक नाम था – उधम सिंह। उधम सिंह, जिन्होंने जलियाँवाला बाग की मिट्टी में अपने साथियों का खून देखा। जिन्होंने अपने जीवन को एक ही लक्ष्य के लिए समर्पित कर दिया – न्याय। यह कहानी है एक ऐसे वीर की, जो किसी अखबार की सुर्खी नहीं बना, लेकिन इतिहास की सबसे करारी चोट साबित हुआ।

13 अप्रैल 1919, अमृतसर। बैसाखी का त्यौहार था। जलियाँवाला बाग में हजारों लोग शांतिपूर्वक एकत्र थे। किसी ने कल्पना नहीं की थी कि यह दिन इतिहास के सबसे रक्तरंजित दिनों में तब्दील हो जाएगा। जनरल डायर की क्रूरता ने मासूमों पर गोलियों की बौछार कर दी। न कोई चेतावनी, न कोई चेतावक विचार। निहत्थे लोगों पर मशीनगनों से फायरिंग हुई। लाशों की चादर बिछ गई। सैकड़ों लोग मारे गए, और हजारों जख़्मी। पूरा बाग खून से लाल हो गया।

उसी नरसंहार में एक 20 वर्षीय युवा घायल, लेकिन जीवित बचा–उधम सिंह। उन्होंने न केवल उस घटना को देखा, बल्कि उसे अपने सीने में पत्थर की तरह गड़ा लिया। उन्होंने न शोर मचाया, न कोई शिकायत की। पर उनके अंदर एक ज्वाला धधक रही थी, जो शांति से नहीं बुझने वाली थी। उधम सिंह ने अपने जीवन को एक ही दिशा दी–इस क्रूरता का बदला लेना। उन्होंने प्रतिशोध नहीं, न्याय की भाषा चुनी। वे वर्षों तक खामोशी से तैयारी करते रहे। अपने देश से दूर जाकर दुश्मन की धरती पर खड़े होकर भारत का परचम लहराने का उन्होंने प्रण लिया। यह कोई आवेश में किया गया कार्य नहीं था, यह एक सुनियोजित नैतिक युद्ध था। 1934 में वे लंदन पहुँचे। वहाँ वे गुमनाम ज़िंदगी जीते रहे। उनका मकसद केवल ओह्नडायर तक पहुँचना था–वह व्यक्ति जिसने जनरल डायर के कत्लेआम को समर्थन और सम्मान प्रदान किया था। 13 मार्च 1940 को वह दिन आया, जब उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के एक सभागार में जाकर, कैक्सटन हॉल में ओह्नडायर को गोली मारी। वह गोली केवल एक शरीर को नहीं भेदती थी, वह एक साम्राज्य की आत्मा को झकझोर देती थी। उधम सिंह वहीं गिरफ्तार हुए। उन्होंने भागने की कोई कोशिश नहीं की। अदालत में खड़े होकर उन्होंने गर्व से कहा, ह्लमैंने मारा है। यह प्रतिशोध नहीं, न्याय है। मैं अपने देश के लिए मरने जा रहा हूँ, और मुझे इस पर गर्व है ह्ल उनके चेहरे पर न पछतावा था, न भय। वह एक आत्मा थी, जो न्याय के सिद्धांत पर अडिग थी।

ब्रिटिश शासन की नींव को यह घटना अंदर तक

हिला गई। एक भारतीय, साम्राज्य की राजधानी में आकर, खुलेआम न्याय कर गया। यह केवल एक हत्या नहीं थी, यह अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ एक नैतिक घोषणापत्र था। उधम सिंह ने यह दिखा दिया कि भारतवासी केवल लड़ाई के मैदान में ही नहीं, विवेक और साहस के साथ भी लड़ सकते हैं। आजादी के बाद भारत ने उधम सिंह को ₹शहीद-ए-आजम₹ की उपाधि दी। लेकिन क्या हम सच में उनके विचारों और बलिदान के योग्य उत्तराधिकारी बन पाए हैं?

आज भी हमारे देश में अन्याय मौजूद है। बलात्कारियों को राजनीतिक संरक्षण मिलता है, पत्रकार जेलों में बंद हैं, गरीब किसान आत्महत्या कर रहा है और सत्ता मौन है। क्या यही वह भारत है, जिसकी कल्पना उधम सिंह ने की थी? क्या हममें से किसी के भीतर वैसी आग बची है?

उधम सिंह ने बंदूक चलाई थी, लेकिन वह गोली भारत की चेतना को जगा गई थी। वह गोली एक उदाहरण थी, कि अगर अन्याय को सहा गया, तो वह बार-बार दोहराया जाएगा। उन्होंने यह दिखाया कि सच्चा राष्ट्रभक्त वह नहीं जो तिरंगा लहराकर भाषण देता है, बल्कि वह है जो अन्याय के सामने कभी न झुके। आज जब हम राष्ट्रवाद के नाम पर नफरत का बाजार सजते देख रहे हैं, तो उधम सिंह का नाम हमें आइना दिखाता है। उन्होंने कभी किसी धर्म, जाति या पार्टी के नाम पर संघर्ष नहीं किया। उनका उद्देश्य केवल एक था–न्याय और स्वतंत्रता। उनकी जयंती या पुण्यतिथि पर हम मोमबत्तियाँ जलाते हैं, प्रतिमाओं पर फूल चढ़ाते हैं। लेकिन यह श्रद्धांजलि तब तक अधूरी है जब तक हम उनके विचारों को अपने जीवन में न उतारें। देशभक्ति केवल एक दिवस की भावना नहीं हो सकती। वह एक निरंतर जागरूकता है, जो हर अन्याय के खिलाफ आवाज बनकर उठती है। आज के युवाओं के लिए उधम सिंह एक आदर्श हैं। एक ऐसा आदर्श जो कहता है – धैर्य रखो, पर चुप मत रहो। तैयारी करो, पर डर मत खाओ। न्याय माँगो नहीं, उसे प्राप्त करो।

अगर हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे सच्चे नागरिक बनें, तो हमें उन्हें उधम सिंह की कहानी केवल पाठ्यपुस्तकों से नहीं, बल्कि जीवन के उदाहरणों से सिखानी होगी। उनकी तस्वीर केवल दीवार पर न टांगे, बल्कि उनके सिद्धांतों को अपने आचरण में उतारें। भारत को आज भी उधम सिंह जैसे लोगों की जरूरत है। जो सत्ता से नहीं डरते, जो सत्य के लिए खड़े होते हैं, और जिनकी दृष्टि केवल अपने स्वार्थ तक सीमित नहीं होती। हमें उधम सिंह को केवल ह्यअतीतह्ल नहीं, ह्यवर्तमानह्ल बनाना होगा। जिस दिन हम अपने चारों ओर अन्याय देखकर चुप नहीं रहेंगे, उसी दिन उधम सिंह का बलिदान सच्चे अर्थों में सार्थक होगा। वह दिन जब हर नागरिक अन्याय के खिलाफ अपनी आवाज बन जाएगा–वही दिन उधम सिंह के भारत की शुरूआत होगी। उधम सिंह की एक गोली ब्रिटेन की संसद में चली थी, लेकिन उसकी गूंज आज भी भारत की आत्मा में है। वह गूंज हमें हर रोज पूछती है–क्या तुम तैयार हो अन्याय के खिलाफ खड़े होने के लिए? क्या तुम केवल श्रद्धांजलि देने आए हो या उनके जैसे कुछ करने का साहस भी रखते हो? उधम सिंह सरदार केवल एक नाम नहीं, एक विचार हैं। वह विचार जो कहता है कि आजादी केवल राजनीतिक नहीं, नैतिक साहस से मिलती है। वह विचार जो हमें बार-बार याद दिलाता है कि क्रांति केवल तलवार से नहीं, आत्मा के विश्वास से होती है।

उधम सिंह, तुम्हें नमन!

तुम्हारी वह एक गोली आज भी हमें जगाने के लिए काफी है।

-प्रियंका सौरभ

जयपुर की महारानी गायत्री देवी का निधन 29 जुलाई 2009 को जयपुर में ही 90 वर्षकी आयु होगया था गायत्री देवी दिल्ली की तिहाड़ जेल में रहने वाली भारत की सबसे खूबसूरत महारानी थीं। वह तत्कालीन प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी की सबसे बड़ी आलोचक थीं। सूच्य है कि जब देश में आपातकाल लगाया गया था तब गायत्री देवी को गिरफ्तार कर लिया गया। वह कांग्रेस के खिलाफ स्वतंत्र पार्टी के रूप में - चुनाव लड़ती थीं। बता दें कि - इनका जन्म यूके के लंदन में 23 मई 1919 को पिता जितेन्द्र नारायण और मां इंदिरा देवी के यहां हुआ था। बंगाल के कूच बिहार के राजा थे। जयपुर के राजा सवाई मान सिंह के साथ इनका विवाह हुआ था।

पतंग उड़ाइए, किसी की जिन्दगी मत काटिए

हर शहर, हर गली, हर मोहल्ले में, जब बच्चे और किशोर पतंग उड़ाने निकलते हैं, तो उनका उद्देश्य केवल आसमान छूना होता है। लेकिन दुर्भाग्य से अब पतंग की यह उड़ान कई बार किसी की जान लेकर ही थमती है। इसका कारण कोई आम धागा नहीं, बल्कि एक जानलेवा उत्पाद है– चाइनीज मांझा। यह मांझा अब केवल पतंगों की डोर नहीं रहा, यह सड़क पर चल रहे आम आदमी की ज़िंदगी का दुश्मन बन चुका है। हर दिन अखबारों में ऐसी खबरें आती हैं कि फलां व्यक्ति की गर्दन मांझे से कट गई, किसी पक्षी के पर मांझे में उलझकर छिल गए, किसी स्कूली बच्चे का गला बुरी तरह घायल हो गया, कोई बाइक सवार अचानक बेहोश होकर गिर पड़ा, क्योंकि उसे नहीं पता था कि उसकी राह में मौत एक पारदर्शी धागे में लटकी हुई है।

आज की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं, जहाँ टेक्नोलॉजी ने हर चीज को तेज, धारदार और सस्ता बना दिया है। उसी का दुष्परिणाम है यह चाइनीज मांझा। यह नायलॉन, प्लास्टिक और धातु के महीन रेशों से बना होता है जो देखने में भले ही सामान्य डोर लगे, लेकिन इसमें शीशे की तरह तीखी धार होती है। यह ना टूटता है, ना गलता है और ना ही आसानी से दिखाई देता है। यह हवा में लहराता है और जब किसी की गर्दन, चेहरे या हाथ से टकराता है तो त्वचा को चीरता हुआ शरीर में गहरा घाव छोड़ जाता है। कई मामलों में तो यह मांझा किसी धारदार हथियार की तरह काम करता है और गले की नसों तक को काट देता है, जिससे तुरंत खून का बहाव रुकता नहीं और पीड़ित की जान तक चली जाती है।

सवाल यह है कि जब यह मांझा इतना जानलेवा है, तो इसका खुलेआम व्यापार कैसे हो रहा है? सड़कों के किनारे, बाजारों में, ऑनलाइन वेबसाइटों पर, यह चाइनीज मांझा अब भी बेचा जा रहा है। प्रतिबंध केवल कागजों में दर्ज है, जमीनी स्तर पर न कोई कार्रवाई हो रही है, न ही कोई सख्ती। प्रशासन की यह चुप्पी इस मांझे जितनी ही धारदार और खतरनाक है। एक तरह से यह मौन स्वीकृति है उस उत्पाद के लिए, जो हर दिन किसी के खून से लाल हो रहा है। कानून होने के बावजूद जब कार्यवाही नहीं होती, तो जनता का विश्वास टूटता है और गलत व्यापारियों के हौसले और बुलंद हो जाते हैं। समस्या यह भी है कि इस मांझे को उपयोग करने वालों को इसके दुष्परिणामों की गंभीरता का अंदाजा नहीं होता। उन्हें लगता है कि यह मांझा मजबूत है, इससे पतंगें ज्यादा काटी जा सकती हैं और प्रतिस्पर्धा में जीत हासिल की जा सकती है। पर वे भूल जाते हैं कि यह जीत किसी की जिंदगी की हार बन सकती है। अगर वे एक बार भी अस्पतालों की इमरजेंसी वार्ड में जाकर देखें कि चाइनीज मांझे से घायल लोग कैसी हालत में होते हैं, तो शायद वे कभी भी इसे हाथ में न लें। कई बार तो बच्चे भी इस मांझे के कारण जख्मी होते हैं। उनके नाजुक शरीर पर यह मांझा ऐसी चीर देता है जिसे देखकर दिल दहल जाता है। कल्पना कीजिए, एक मासूम बच्चा साइकिल चला रहा हो और अचानक उसके चेहरे से यह मांझा लिपट जाए– उसकी आंखों, गालों या गर्दन पर जो जख्म होगा, वह जीवनभर नहीं भरेगा। यह मांझा केवल इंसानों के लिए नहीं, पशु-पक्षियों के लिए भी अभिशाप बन गया है। हर वर्ष हजारों पक्षी पतंगों के इस मांझे में फंसकर घायल होते हैं या दम तोड़ देते हैं। खासकर मकर संक्रांति और स्वतंत्रता दिवस जैसे अवसरों पर जब पतंगबाजी चरम पर होती है, तो आकाश में उड़ती चीलें, कबूतर, तोते और अन्य पक्षी इस मांझे में उलझकर घायल हो जाते हैं। कई पक्षियों के पर कट जाते हैं, कुछ की आंखें फूट जाती हैं और कुछ तो पेड़ों या छतों से उलझे मांझे में लटककर मर जाते हैं। ये दृश्य किसी भी संवेदनशील इंसान को भीतर से झकझोर देते हैं, पर दुर्भाग्य है कि पतंग के खेल में हम केवल अपनी जीत का रोमांच देखते हैं, किसी की जान जाने की पीड़ा नहीं। प्रशासन अगर चाहे, तो इस पर तुरंत कार्रवाई हो सकती है। सबसे पहले तो सभी जिलों में विशेष अभियान चलाकर चाइनीज मांझे की बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लागू करना होगा। बाजारों में दुकानों की नियमित जांच की जाए और जिस भी व्यापारी के पास यह मांझा पाया जाए, उसके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए। केवल जुमार्ना नहीं, बल्कि जेल की सजा का प्रावधान भी होना चाहिए ताकि लोग डरें। साथ ही समाज के स्तर पर भी जागरूकता अभियान जरूरी है। स्कूलों, कॉलोनियों, पंचायतों और युवाओं के बीच इस मांझे के दुष्परिणामों की जानकारी दी जाए।

डा. सत्यवान सौरभ

सामाजिक हितैषी है संत प्रेमानंद महाराज, कथावाचकों की ट्रोलिंग बंद हो..!

मुद्दा : @ छायाचित्र और रिपोर्ट : पंकज सीबी मिश्रा

⚠ मथुरा के प्रेमानंद महाराज का बयान वायरल–"जो लड़की 4 पुरुषों से संबंध रखती है, वो पति से रिश्ता नहीं निभा सकती।" सोशल मीडिया पर भड़के लोग, संतों से ऐसी सोच की उम्मीद नहीं थी।

मथुरा (वृन्दावन) के प्रख्यात संत और मोटिवेशनल महात्मा प्रेमानन्द जी महाराज के एक वक्तव्य को यूट्यूब मिडिया सहित अन्य नें तोड़ मरोड़ कर विवादित कर दिया जबकि उनकी कही गई बात / वक्तव्य वर्तमान समाज के व्यभिचार और कुरीतियों को इंगित करता एक खरा सत्य है। प्रदेश के मिडिया विश्लेषक एवं पत्रकार पंकज सीबी मिश्रा नें यूट्यूब, इंस्टाग्राम और अन्य मिडिया द्वारा उक्त मुद्दे को बेवजह तूल देने पर कहा कि दिक्कत लोगो को वक्तव्य से नहीं महाराज जी के लोकप्रियता से है। मुझे लगता है कि बतौर सोशल थिंकर और पत्रकार मेरी सोच महाराज जी के कथन से सहमत है । जी हाँ ! प्रेमानंद महाराज नें कड़वा सत्य उजागर किया है। बस केवल उन्हें प्रतिशत नहीं बताना चाहिए था क्योंकि ये कोई आंकड़ा तो हो ही नहीं सकता। इस देश में बहुत अच्छे लड़के लड़कियाँ भी हैं इसलिए शादी से नहीं डरना चाहिए, भगवान के आश्रित होकर खुद को अच्छे बनाये रखिये साथी भी अच्छा ही मिलेगा और संत पर आस्था रखिए तभी संत भी अच्छा लगेगा । संत प्रेमानंद महाराज ने सिर्फ सामाजिक बात की है । नैतिकता की बात की है इसलिए स्त्री स्त्री करके फालतू हाय हाय मचाना बंद कीजिए। राधे राधे का जाप कीजिये और संत को सनातन के लिए काम करने दीजिये। उन्हें इसकी धार्मिक स्वतन्त्रता है। कुछ सनातन विरोधी उन्हें विवादों में घसीट कर उनका नाम खराब करना चाह रहें जबकि हमें यह दिखाया जा रहा कि उनके द्वारा स्त्री वर्ग को टारगेट किया गया है, पुरुषों को क्यों नहीं कहा गया है ? कहा गया है भाई ! कोई भी संत महात्मा किसी में भेदभाव नहीं करते वह दोनों पक्षों को हमेशा बराबर समझाते हैं। उन्होंने ये बात पुरुषों के लिए भी कही थी, लेकिन मीडिया को विवाद खड़ा करना था, इसलिए केवल एक पक्ष को ही सामने लाया गया। उन्होंने दोनों को समझाया है कि शादी के पहले/बाद अगर बार-बार अपनी सीमाएं लांघोगे, तो रिश्ता संभालना मुश्किल हो जाएगा। पहले समाज को चुप कराया गया फिर परिवार के लोगों को चुप कराया गया और अब संत महात्माओं को भी चुप कराया जा रहा है। समाज में जो हो रहा है वह कहा ही जाएगा। क्या चाहते हैं क्या कहा जाए कि यह गलियों में बाहों में बाहें डालकर घूमते लड़के लड़कियां सही हैं,यह नग्नता परोसती रील्स सही है, वैवाहिक रिश्तो में गिरती मयार्दाएं सही है।

सच सुनने की हिम्मत रखिए। आए दिन रिश्तों को कलंकित करने कि खबरें सुनते और पढ़ते होंगे। अल्ट, मूडेक्स, उल्लू, फेनी जैसे वेब प्लेटफॉर्म से रिश्ते कलंकित हो रहें थे तब तो आवाज नहीं उठाया। और आप चाहते है कि संत के विरोध को व्यक्तिगत आजादी मान लिया जाए। समझ नहीं आ रहा आखिर कैसा भविष्य सौंपना चाहते हो अपने बच्चों को। प्रेमानन्द महाराज ने पुरुषों पर भी बोला। कई लड़कियों से व्यभिचार करने को गलत कहा लेकिन सब चुप रहे क्योंकि तब बात सही थी।महिलाओं और लड़कियों पर बोला तो समझने के बजाय कुछ एजेंडाबाज उन्हें भला बुरा कहलवाने लगे। कूदने लगे। अरे पुरुष पर स्त्री गमन करेगा तो वो जो स्त्री और पुरुष है दोनों गलत नहीं है ? उन्होंने कभी पुरुष या स्त्री का विभेद नहीं किया है, बल्कि हर किसी को गलत रास्ते पर चलने से रोका है। एक बार पुरुषों ने सवाल किया था कि शादी से डर लग रहा है महाराज जी तो क्या करें ? इस पर महाराज जी ने कहा कि कोई भी लड़की/लड़का अगर लिव इन में रहने के बाद अगर मन को नहीं भाया तो पार्टनर बदल देते हैं। बार बार साथी बदलने वाले भला कौन सा रिश्ता सम्हाल सकेंगें ! इसमें उम्र या सिर्फ महिलाएं जैसी और कोई बात नहीं कही गयी है। सीधी सी एक बात है दस पार्टनर बदलने वाले लोग गन्दे आचरण वाले होते हैं। उन्हें सम्बन्ध बनाना केवल मजे के तौर पर दिखता है न कि रिश्ता निभाना। चरित्र और सोच से पावन रहिए अपने जीवनसाथी में ही मन लगाएं जीवन सुकून से गुजरेगा सार्थक होगा ।

पंकज सीबी मिश्रा
जौनपुर यूपी

राखी का धागा

राखी का ये बंधन प्यारा,
सावन सा भीगा-सारा।
तेरी कलाई पे जो लिपटा है,
वो मेरा सारा सहारा।
न कोई माँगा धन-संपत्ति,
न माँगा कोई ताज-मुकुट।
बस माँगी एक छोटी सी वादा,
₹संग रहूं मैं हर संकट-संग जुट ₹
रक्षा का अर्थ तलवार नहीं,
ना ही कोई रण का मैदान।
बहन के आँसू पोंछ सके,
वही है सच्चा महान इंसान।
आज भी वो बचपन का आँगन,
जहाँ तू मुझे चिढ़ाया करता।
कभी मेरी चोटी खींच के,
फिर खुद ही चुपचाप मनाता रहता।
अब जब तू दूर बहुत है,
शहरों की भागदौड़ में खोया।
फिर भी राखी जब भी आई,
तेरी यादों ने हर कोना भिगोया।
डाक से भेजूं, या व्हाट्सऐप पे,
राखी की तस्वीर सजा दूं?
पर जो एहसास धागे में है,
क्या वो मोबाइल में लिपटा दूं?
माना अब तू मुझसे बड़ा है,
और जिम्मेदारियाँ हैं भारी।
पर एक बहन की कोमल आस,
अब भी तुझसे वही प्यारी।
तो आज इस रक्षा बंधन पर,
ना सिर्फ रक्षा का वचन देना।
बल्कि बहनों के सपनों को,
पंखों सी ऊँचाई भी देना।

-प्रियंका सौरभ

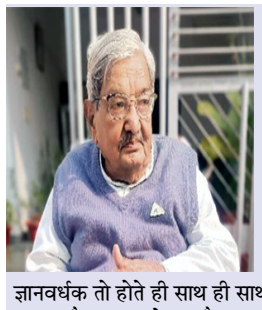

साहित्यिक दुनिया कुछ रिक्त हो गई...

वरिष्ठ साहित्यकार और राष्ट्रीय ख्याति के व्यंग्यकार गोपाल चतुर्वेदी का निधन हिंदी साहित्य के लिए बड़ी क्षति है। वह लखनऊ की सामाजिक और साहित्यिक एवं । सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र बिंदु थे। गोपाल और उनकी पत्नी निशा चतुर्वेदी, दोनों अखिल भारतीय सेवा के उच्च पदों पर आसीन रहे, तो उनका जगह-जगह आना-जाना हुआ लिहाजा उनके पास तमाम बड़े साहित्यकारों, राजनेताओं और रचनाकारों से जुड़े रोचक संस्मरण थे। आपसी बातचीत में' गोपाल इतने कुशल थे कि जब वे अतीत की यात्रा पर जाते तो सामने वाले को मंत्र मुग्ध कर देते थे। उनके संस्मरण ज्ञानवर्धक तो होते ही साथ ही साथ मनमोहक एवं चित्ताकर्षक भी। इन्हीं वजहों से उनसे मुलाकात करने वाला सदैव प्रसन्न होकर लौटा। इनके व्यंग्य देश भर की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। उन्होंने इस विधा में नौ पुस्तकें लिखीं जिनमें धांधलेश्वर, दूध का धुला लोकतंत्र, पत्थर फेंको सुखी रहो' जैसी रचनाएं खासा पसंद की गईं। गोपाल खाने पीने के इतने शौकीन थे कि लखनऊ की बेहतरीन से बेहतरीन दुकान की मिठाई, कुल्फी आदि वह खुद भी खाते और मेहमानों को भी खिलाते । यूं तो लखनऊ जिस मेहमान नवाजी, शराफत, मीठी जुबान के लिए जाना जाता है। गोपाल उसी संस्कृति के संरक्षक भी थे और प्रतीक भी। अपनी रचनाधर्मिता से ही नहीं, व्यक्तित्व से भी वह लोगों को खूब प्रभावित करते थे। बहुत नपा-तुला बोलते थे। अपने विचारों को लेकर काफी स्पष्ट थे। स्मरणीय है कि- जब वह भाषा संस्थान से सेवानिवृत्त हुए थे आगे चलकर संस्थान की पुरस्कार चयन समिति में बतौर सलाहकार जोड़ लिया गया। इस समिति में उनका काम संस्थान के पुरस्कारों के लिए जो करीब एक करोड़ रुपए से अधिक के होते थे लोगों के चयन में सुझाव देना था। उनके लिए यह मायने नहीं रखता कि कौन किस राजनीतिक विचारधारा से जुड़ा है। वह कहा करते थे कि बेशक हम किसी भी राजनीतिक सोच से सहमत नहीं हो लेकिन पुरस्कार उन लोगों को ही मिलना चाहिए जिन्होंने समाज के व्यापक हित में काम किया है। फिर चाहे वह किसी भी धड़े के साहित्यकार, रचनाकार, नाटककार, कवि या राजनेता हो ।

फिर कभी न आए ऐसी बरसात

उम्र के उस पड़ाव पर छूट गया अपनों का साथ
जब जरूरत थी बढ़ापे में दोगे सहारा थाम लोगे हाथ
क्या कसूर था माली का जिसने खून पसीने से सींचा था
कैसे जियेगा माली जब खाली हो गए दोनों हाथ
सो रहे थे सब रात को मीठी नींद थी पड़ी
आफत ने आ घेरा मुश्किल की थी घड़ी
ऐसा बरसा मेघ की सब उजड़ गया
किसी को नजर नहीं आई मौत कहाँ थी खड़ी
किसको पुकारें किसको आवाज दे
कोई नहीं सुन रहा मेरी पुकार
मुझे भी ले जाते साथ क्यों रह गयी अकेली
कैसे जियूंगी तुम बिन कभी खत्म न होगा अब इंतजार
विधाता का लिखा कोई मिटा नहीं सकता
जितना लिखा है उससे ज्यादा कोई रिश्ता निभा नहीं सकता
लाख आवाजें लगा ले कोई जितना मर्जी चिल्ला ले
एक बार जो चला गया वह वापिस आ नहीं सकता
कैसे रहूंगी घर में अकेली किससे करूंगी अब बात
किसको जख्म दिखाऊँ किसको सुनाऊं दिल के जज्बात
जीना तो पड़ेगा कोई किसी के साथ नहीं जाता
दिल को दिए जख्म जिसने फिर कभी न आये ऐसी बरसात

रवींद्र कुमार शर्मा
घुमारवीं बलासपुर हि प

हिंदी

हम हिंदी के उपासक हैं,
हिंदी देवी की मूरत ।
हिंदी भारत की सूरत ।।
हिंदी में संस्कृति की धारा ।
हिंदी मृदुल, जन-जन का नारा ।।
हम हिंदी के उपासक हैं,
इसमें विविध लोकभाषाओं की छवि।
नित सृजन करते लाखों लेखक -कवि।।
हिंदी भारत का जीवन ।
हिंदी भारत का तन-मन ।।
हम हिंदी के उपासक हैं,
हिंदी घर-घर की भाषा ।
हिंदी स्वर्णिम कल की आशा।।
लिखें , पढ़ें और बोलें हिंदी ।
तो हर हाल में समृद्ध हो हिंदी ।।
हम हिंदी के उपासक हैं,
हिंदी साधना, नैतिक दायित्व हमारा ।
हिंदी के प्रति सच्चा हो प्यार हमारा ।।

मुकेश कुमार ऋषि वर्मा
फतेहाबाद, आगरा,

घूँघट की बगावत

03 अगस्त 2025

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित
हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

भारत में शिक्षा संस्थान अब केवल डिग्रियों की फैक्ट्री बनते जा रहे हैं, जहां बच्चों की संभावनाएं और संवेदनाएं दोनों दम तोड़ रही हैं। कोटा, हैदराबाद, दिल्ली जैसे शहर आत्महत्या के आंकड़ों से दहल रहे हैं। यह संकट केवल परीक्षा का नहीं, हमारी सोच और व्यवस्था का है – जो रैंक को जीवन से ऊपर रखती है। शिक्षा में संवाद, मानसिक परामर्श और मानवीयता की जगह खाली है। जब तक हम शिक्षा को जीवन से नहीं जोड़ेंगे, तब तक यह व्यवस्था सफल नहीं, घातक सिद्ध होती रहेगी।

संभावनाओं की कब्रगाह बनते संस्थान

कभी जिन विद्यालयों और महाविद्यालयों को ज्ञान के मंदिर कहा जाता था, आज वही स्थान धीरे-धीरे उस पीड़ा के पर्याय बनते जा रहे हैं, जहां बच्चों की हँसी नहीं, तनाव भरी चुप्पी गूंजती है। एक दौर था जब शिक्षा का उद्देश्य जीवन को सुंदर बनाना था, आज शिक्षा जीवन का भार बन गई है। हम एक ऐसे दौर में पहुंच चुके हैं जहां विद्यार्थी शिक्षा से नहीं, शिक्षा के ढांचे से डरने लगे हैं। कोटा, हैदराबाद, दिल्ली, चेन्नई, पुणे – न जाने कितने शहरों में हर साल सैकड़ों छात्र आत्महत्या कर लेते हैं। ये केवल घटनाएं नहीं हैं, ये हमारे तंत्र की हार की घोषणा हैं। राजस्थान का कोटा शहर, जिसे आज प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी का केंद्र माना जाता है, वह इस समय देश का सबसे बड़ा मानसिक तनाव केंद्र भी बनता जा रहा है। हर साल लाखों विद्यार्थी डॉक्टर, अभियंता, प्रशासनिक अधिकारी या वैज्ञानिक बनने के सपने लेकर यहां आते हैं। लेकिन इन सपनों की कीमत इतनी भारी होती है कि सैकड़ों बच्चे उस बोझ को सह नहीं पाते और जीवन समाप्त कर बैठते हैं। कोचिंग संस्थानों में पढ़ाई अब एक मानसिक परीक्षा बन चुकी है। सुबह 6 बजे से रात 10 बजे तक कक्षाएं, गृहकार्य, परीक्षा, फिर परिणाम – इस चक्रव्यूह से बाहर निकलने का कोई द्वार नहीं होता। विद्यार्थियों के लिए न तो खेल-कूद का समय होता है, न साहित्य, संगीत या संवाद का। न दोस्तों के लिए समय होता है, न अपने आप से बात करने का। और ऐसे माहौल में जब कोई बच्चा असफल होता है, तो वह स्वयं को जीवन के अयोग्य समझ लेता है। यह मानसिकता इतनी गहरी है कि वह सोच भी नहीं पाता कि जीवन केवल एक परीक्षा से तय नहीं होता।

एक छात्र की आत्महत्या केवल एक जीवन का अंत नहीं है, वह उस शिक्षा व्यवस्था पर कठोर टिप्पणी है जो विद्यार्थियों को नंबर और रैंक के तराजू में तौलती है। राष्ट्रीय अपराध अभिलेख ब्यूरो के अनुसार 2021 में 13,000 से अधिक विद्यार्थियों ने आत्महत्या की। यह संख्या भारत में शिक्षा के नाम पर होने वाली त्रासदी की भयावहता को दशार्ती है। क्या हमने कभी यह सोचने की कोशिश की कि ये बच्चे क्यों आत्महत्या कर रहे हैं? क्या केवल परीक्षा में असफल हो जाना किसी को जीवन त्यागने के लिए मजबूर कर सकता है? दरअसल, समस्या परीक्षा की नहीं है, समस्या उस सोच की है जिसमें असफलता को कलंक माना जाता है। माता-पिता, समाज, शिक्षक, कोचिंग संस्थान – सब इस मानसिकता को पोषित करते हैं कि जो बच्चा प्रतियोगिता में सफल नहीं हुआ, वह निकम्मा है। परिणामस्वरूप, बच्चा स्वयं को दोषी मानने लगता है और धीरे-धीरे अवसाद की गर्त में चला जाता है। किसी से अपनी बात कहने का साहस भी उसमें नहीं रहता।

भारत की शिक्षा प्रणाली में वर्षों से यह कमी रही है कि यहाँ मानसिक स्वास्थ्य को कभी प्राथमिकता नहीं दी गई। विद्यालयों और महाविद्यालयों में न तो स्थायी मानसिक परामर्शदाता होते हैं, न छात्रों के साथ खुला संवाद। माता-पिता भी अक्सर यह नहीं समझ पाते कि उनका बच्चा क्या महसूस कर रहा है। बच्चों से 'कैसे हो' पूछने के बजाय 'कितना पढ़ा' पूछा जाता है।

शिक्षा व्यवस्था की इस अमानवीयता को और अधिक तीव्र बना दिया है शिक्षा के व्यावसायीकरण ने। आज शिक्षा एक सेवा नहीं, एक उद्योग बन चुकी है। कोचिंग संस्थान करोड़ों का व्यापार करते हैं। उनका उद्देश्य केवल बच्चों को परीक्षा में सफल बनाना है, उन्हें जीवन में सक्षम बनाना नहीं। वे बच्चों को उत्तर याद करवाते हैं, सवाल पूछने की आदत नहीं सिखाते। वे सफलता की मशीनें गढ़ते हैं, इंसान नहीं।

बात केवल कोचिंग की नहीं है। देश के प्रतिष्ठित महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों से भी आत्महत्याओं की खबरें आती रही हैं। रोहित वेमुला, एक शोधार्थी, जिसकी आत्महत्या ने पूरे देश को हिला दिया था, वह भी संस्थागत भेदभाव और असंवेदनशीलता का शिकार था। आज भी जातीय, सामाजिक, भाषाई और क्षेत्रीय भेदभाव के अनेक रूप हमारे शैक्षिक संस्थानों में मौजूद हैं। विद्यार्थियों को मानसिक सुरक्षा नहीं मिलती, भावनात्मक सहारा नहीं मिलता, और जब सब रास्ते बंद हो जाते हैं, तो वे जीवन को ही समाप्त करने का निर्णय लेते हैं।

समस्या बहुत गहरी है और इसका समाधान केवल श्शोक प्रकट करनेश्र या श्नियमन बनानेश्र से नहीं होगा। हमें शिक्षा की परिभाषा को फिर से गढ़ना होगा। शिक्षा केवल डिग्री, अंक या नौकरी का माध्यम नहीं हो सकती। शिक्षा का उद्देश्य जीवन को समझना, आत्मविश्वास विकसित करना, और हर परिस्थिति में संतुलन बनाए रखना होना चाहिए।

हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रत्येक शिक्षा संस्थान में स्थायी मानसिक परामर्शदाता हों। बच्चों के लिए खुला मंच हो जहां वे अपने विचार, भावनाएं और समस्याएं बिना डर के व्यक्त कर सकें। परीक्षा पद्धति ऐसी हो जो केवल रटंत विद्या को न परखे, बल्कि रचनात्मकता, तर्कशक्ति और संवेदना को भी महत्व दे। इसके साथ ही, कोचिंग संस्थानों पर कठोर नियंत्रण की आवश्यकता है। उनकी फीस, समय-सारणी, परीक्षा पद्धति – सब कुछ सरकार द्वारा विनियमित किया जाना चाहिए। उन्हें केवल व्यावसायिक दृष्टिकोण से नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि उन्हें सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत लाना होगा। सरकार को भी इस विषय पर केवल बयानबाजी करने के बजाय ठोस नीति बनानी चाहिए जो आत्महत्याओं की घटनाओं को रोक सके। माता-पिता को भी अपनी भूमिका समझनी होगी। बच्चों से संवाद बढ़ाना होगा, उन्हें यह विश्वास दिलाना होगा कि उनकी असफलता कोई अपराध नहीं है। हमें यह समझना होगा कि हर बच्चा अद्वितीय होता है, और हर किसी की सफलता की परिभाषा एक जैसी नहीं हो सकती। यह भी आवश्यक है कि समाज में असफलता को सहजता से स्वीकार करने की संस्कृति विकसित की जाए। हमें यह सिखाना होगा कि परीक्षा में असफल होना जीवन में असफल होना नहीं है। यदि कोई बच्चा एक परीक्षा में नहीं सफल हो पाया, तो उसके लिए और भी रास्ते हैं। यह जीवन केवल रैंक की सूची नहीं है, यह भावनाओं, संवेदनाओं और संभावनाओं की यात्रा है।

हमारा देश तभी शिक्षित माना जाएगा जब यहां के शिक्षा संस्थान बच्चों को केवल पाठ्यक्रम नहीं, जीवन जीने की कला सिखाएं। जब विद्यार्थी केवल डिग्रियां नहीं, उद्देश्य लेकर निकलें। जब शिक्षा बच्चों को नंबरों से नहीं, उनकी पहचान से जोड़ें। आज आवश्यकता इस बात की नहीं है कि हम बच्चों को श्किताबें रटवाएंश्र, बल्कि इस बात की है कि हम उन्हें आत्मविश्वास और आत्मसम्मान देना सीखें। उन्हें यह विश्वास दिलाना होगा कि वे जैसे हैं, वैसे ही पर्याप्त हैं। उनकी संभावनाएं अंकतालिकाओं से बड़ी हैं, और उनका जीवन परीक्षा के परिणामों से अधिक मूल्यवान है। अगर हम यह नहीं कर सके, तो हर वर्ष हजारों रोशनी बुझती रहेंगी, और हम केवल मोमबत्तियां जलाकर अफसोस करते रहेंगे। शिक्षा को फिर से जीवनमूल्य आधारित बनाना होगा – जहां विद्यार्थी केवल डिग्री नहीं, उद्देश्य पाएं; केवल नौकरी नहीं, पहचान पाएं; और केवल पढ़ाई नहीं, जीने का विश्वास पाएं।

प्रियंकासौरभ

झूला मन की उड़ान है, उमंगों की छलांग

भारतीय जीवन दर्शन में जीवन का लक्ष्य परम आनंद प्राप्ति का है और यह परम आनंद स्वयं पाने का नहीं, दूसरों को देने का है, तभी आपका आनंद सार्थक है। यही कारण है कि अनेकानेक पर्व भारतीय जीवन पद्धति में सादर उपस्थित हैं और संभवतः यही कारण है कि हमारे यहां झूला झूलना संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। भारत में झूला की परंपरा केवल आनंद लेने की नहीं, बल्कि यह भावनाओं का उत्सव है। झूला स्त्री के लिए केवल झूलने का साधन नहीं, आत्मा की उड़ान है। सावन का महीना आते ही जब आसमान हरियाली से भीगता है, धरती को नम हवाएं चूमती हैं तो प्रकृति के रंग को देख भारतीय नारी के मन में एक ही आकांक्षा सिर उठाती है।

आई सावन की बहार झूला पड़े डार डार
घटा छाई है गगन घनघोर
सखियां झूल रही झकझोर
झीनी झीनी है फुहार भीगा जाए रे
सिंगार करे दादुर पपीहा सोर
देखा जाए तो झूला हमारे जीवन उस

नृत्य की तरह है जो नीरसता में रस घोलता है और स्थिरता में गति का अनुभव कराता है। यह केवल डोरी और लकड़ी का बना एक साधन नहीं, यह वह भावात्मक झोंका है, जो प्रेम, स्मृति, विरह और भक्ति सब कुछ एक साथ बांध देता है।

झूला जहां एक ओर उत्सव का प्रतीक है तो वहीं दूसरी ओर यह विरह का सबसे कोमल और मूक संवाद भी है। सावन की हरियाली में जब पत्तों से लेकर हवाएं तक प्रेम में डूबी होती हैं, तब उसी मौसम में कोई एक स्त्री ऐसी भी होती है, जिसके लिए झूला प्रतीक्षा का राग बन जाता है। जहां झूला विरह का सोपान बन जाता है। मनभावन सावन में जब प्रिय दूर हो, तब झूले की हर पींग में कोई न कोई स्मृति झूलती है-

'बदरा गरजे बुंदिया बरसे, आए नएको संदेस
झूला हमे के झुलाई गुईयां पिया बसे परदेस'

.. और यह स्मृतियां उसे बचपन तक खींच ले जाती हैं जहां मायके का सुख था, मां की प्यारी गोद थी, भाई के साथ निर्मल

झगड़े थे, गुड़िया थीं,
सखी खिलखिलाहटें थीं-
सहेलियां थीं,
नन्ही नन्ही बुंदिया रे सावन का मोरा झूलना
एक झूला डाला मैंने अम्मा जी के बाग में
हरी हरी चूड़ियां रे सावन का मेरा झूलना

एक झूला डाला मैंने बाबा जी के बाग में हरी हरी चुनरी रे सावन का मेरा झूलना एक झूला डाला मैंने भइया जी के बाग में हरी हरी मेहंदी रे सावन का मेरा झूलना इसीलिए झूला झूलने की परंपरा का खास वैशिष्ट्य है। यह केवल सावन का खेल नहीं, यह उन सभी महीनों की मौन गवाही है, जिन्हें वह स्त्री जीती है। झूला जिस पर बैठकर वह केवल देह नहीं, भावनाओं को झुलाती है, हर पींग में छुपी एक दबी पुकार। इसलिए जब भारतीय स्त्री झूले पर बैठती है तो वह केवल बचपन नहीं दोहराती, बल्कि जीवन की सबसे भीतर की अनुभूति को शब्द और गति देती है। झूला उसके लिए उत्सव नहीं वह जगह है जहां स्मृति, प्रतीक्षा और प्रेम की लीला एक साथ झूलती हैं।

भारतीय दर्शन का प्रतीक झूले की सांस्कृतिक व्यापकता अद्भुत है। भारत के अनेक प्रांतों में झूले के साथ जुड़ी हुई विभिन्न लोक परंपराएं हैं। उत्तर प्रदेश और बिहार में महिलाएं तीज, कजरी, झूला और हरियाली जैसे पर्वों में झूले डालती हैं और गीत गाती हैं। राजस्थान में झूले का पर्व हरियाली तीज से जुड़ा है, जहां साज-श्रृंगार और मेहंदी गीत स्त्री जीवन के उत्सव बन जाते हैं। मध्य प्रदेश में मालवा क्षेत्र में झूले के साथ फाग, गणगौर और झूलन उत्सव परंपरागत रूप से मनाए जाते हैं। इन सभी में एक बात समान है झूले को केंद्र बनाकर स्त्रियों की सामूहिकता, हंसी, गीत और स्मृति का आदान-प्रदान। झूला उस आदि स्मृति का भी प्रतिनिधित्व करता है, जहां शिशु अपने जीवन का पहला झूला मां की गोद में पाता है। भारतीय घरों में लकड़ी के क पालने झूले का ही रूप हैं जो प्रेम, सुरक्षा और ममता का पहला अनुभव बनते हैं। झूला मां की न गोद की तरह झूलता है कभी तेज, कभी धीमा , और हर बार आत्मा को एक नई लोरी सुनाता है। यदि गहराई से देखें तो झूला स्वयं भारतीय जीवन-दर्शन का प्रतीक बन जाता है। जीवन की गति कभी ऊपर, कभी नीचे झूले की ही भांति है लेकिन जिस तरह झूला अपनी डोरी से बंधा होकर भी स्वतंत्रता महसूस करता है उसी. तरह भारतीय जीवन में भी बंधन के भीतर मुक्त रहने का भाव है। अब समय बदला है और झूले बहुत कम हो गए हैं। महानगरों में तो क्या छोटे शहरों में भी सावन की पींगें अब पार्कों में पड़े झूलों पर ही लग सकती हैं। समय बदल रहा है और उसके साथ बहुत सी परंपराएं भी, लेकिन यह लोगों को सोचना होगा कि मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक परंपराओं के पास उन्हें जाना होगा.. झूला केवल दो रस्सियों में फंसा पाटा नहीं है। झूला मन की उड़ान है, उमंगों की छलांग है !

स्वास्थ्य कार्यबल की मांग और आपूर्ति एक कठिन समस्या

विजय गर्ग

देश में स्वास्थ्य कार्यबल की मांग और आपूर्ति एक कठिन समस्या है, अधिकांश देशों में पर्याप्त संख्या में डॉक्टरों और नर्सों की कमी है और 2030 तक 18 मिलियन स्वास्थ्य श्रमिकों की अनुमानित वैश्विक कमी है। स्वास्थ्य कार्यकर्ता देशों में प्रवास करते हैं, प्रवाह आमतौर पर ग्लोबल साउथ के देशों से उत्तर में रहने वालों के लिए होता है। जिन देशों से स्वास्थ्य पेशेवर पलायन करते हैं, वे भी आंतरिक आपूर्ति की कमी का सामना करते हैं। उदाहरण के लिए, श्रीलंका व्यापक परित्याग का गवाह है, जिसे अन्य देशों के पेशेवरों को प्राप्त करके (आंशिक रूप से) संबोधित किया जाता है। अनुमानित 10-12 प्रतिशत विदेशी प्रशिक्षित डॉक्टर और नर्स उन देशों से आते हैं, जिन्हें स्थानीय स्वास्थ्य कर्मियों की कमी के लिए जाना जाता है। ओईसीडी डेटा अनुमान बताते हैं कि 2009 से 2019 के बीच, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, ब्रिटेन में 25 प्रतिशत से 32 प्रतिशत डॉक्टर और अमेरिका दक्षिण एशिया और अफ्रीका के मेडिकल ग्रेजुएट थे। भारतीय डॉक्टर, नर्स और अन्य स्वास्थ्य पेशेवर दुनिया भर के देशों में प्रवास करते हैं - लगभग 75,000 भारतीय प्रशिक्षित डॉक्टर ओईसीडी देशों में काम करते हैं, और अनुमानित 640,000 भारतीय नर्स विदेश में काम करती हैं। फिलीपींस एक और उदाहरण है - देश नर्सों और अन्य स्वास्थ्य पेशेवरों के बड़े पैमाने पर निर्यात के लिए प्रसिद्ध है। 193,000 से अधिक फिलीपींस-प्रशिक्षित नर्स विदेश में काम करती हैं, जो दुनिया भर में सभी फिलिपिनो नर्सों का लगभग 85 प्रतिशत हिस्सा हैं।

अर्थशास्त्र और भूराजनीति पुश और पुल कारकों के संयोजन के माध्यम से इस तरह के प्रवास की सीमा और प्रकृति को प्रभावित करते हैं। सीमित कैरियर विकास और कम मजदूरी प्रमुख आर्थिक धक्का कारक हैं। स्रोत देश में राजनीतिक अस्थिरता और संघर्ष अक्सर राजनीतिक धक्का कारक होते हैं। व्यापार समझौते जो प्रवास को प्रोत्साहित करते हैं, स्वास्थ्य संकट जो स्वास्थ्य कार्यकताओं को कुछ क्षेत्रों में खींचते हैं और अंतर्राष्ट्रीय भर्ती नीतियां सभी पुल कारक हैं, जो बदले में, स्रोत देशों में कमी में योगदान करते हैं। फिलीपींस और भारत जैसे देशों ने स्वास्थ्य कार्यकताओं के निर्यात को प्रोत्साहित करने, उन्हें प्रेषण और आर्थिक लाभ के स्रोतों के रूप में देखने के लिए नीतियों को औपचारिक रूप दिया है। फिर भी, दोनों देशों में स्वास्थ्य पेशेवरों की भारी कमी है। प्रेषण और कौशल विकास के रूप में संभावित लाभ के बावजूद, पहले से ही कमी का सामना कर रहे देशों में कार्यबल क्षमता की हानि लाभ को बढ़ाती है। इसलिए, एक संतुलित घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय नीति प्रतिक्रिया है जो व्यक्ति, राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रणाली और वैश्विक इक्विटी की जरूरतों पर केंद्रित है।

राजनयिक लाभ के लिए क्रॉस-कंट्री माइग्रेशन का अक्सर लाभ उठाया जाता है। भारत, जिसे पहले से ही दुनिया की फामेर्सी के रूप में जाना जाता है, अंतरराष्ट्रीय भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए इस तरह के प्रवास का लाभ उठाता है, प्रेषण और निवेश के माध्यम से आर्थिक लाभ को बढ़ावा देता है, स्वास्थ्य क्षेत्रों में अपने वैश्विक प्रभाव को बढ़ाता है, और परिपत्र प्रवास और द्विपक्षीय सहयोग को प्रोत्साहित करने वाली नीतियों के माध्यम से मस्तिष्क नाली की चुनौतियों का प्रबंधन करता है। इसने पड़ोसी और अफ्रीकी देशों में चिकित्सा पेशेवरों को तैनात करके कोविद महामारी के दौरान चिकित्सा कूटनीति को बढ़ाया। अब जरूरत है कि अधिक व्यापक बातचीत करने पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जाए - और लागू करने योग्य - स्रोत और गंतव्य देशों के बीच द्विपक्षीय समझौते, जिसमें संभावित रूप से मुआवजा तंत्र, चिकित्सा शिक्षा में लक्षित निवेश, स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे, या प्रौद्योगिकी हस्तांतरण शामिल हो सकते हैं, कुशल श्रमिकों के नुकसान की भरपाई करने के लिए। डब्ल्यूएचओ कोड इस तरह के समझौतों के पुनर्निर्माण में एक प्रारंभिक बिंदु है। जन्म दर में गिरावट के साथ बढ़ती आबादी बढ़ती मांगों और विकसित देशों में स्वास्थ्य पेशेवरों की तीव्र कमी का कारण बन रही है। भारत और अन्य देश स्वास्थ्य पेशेवरों की आपूर्ति करने की क्षमता रखते हैं। भारत बेहतर संस्थागत तंत्रों के माध्यम से लाभ को अधिकतम कर सकता है, जैसे कि कार्यबल गतिशीलता का प्रबंधन करने के लिए एक के-ंद्रीकृत एजेंसी की स्थापना। विदेशी रोजगार के समन्वय के लिए एजेंसियों की स्थापना के साथ केरल का अनुभव, शिकायतों का समाधान, और वापसी करने वालों का समर्थन राष्ट्रीय दृष्टिकोण को सूचित कर सकता है। तो क्या फिलीपींस के प्रवासी श्रमिकों के विभाग के अनुभव हो सकते हैं।

मलोट पंजाब

आज के अधिकांश अखबारों से साहित्यिक पन्ने या तो पूरी तरह गायब हो चुके हैं या केवल खानापूरी तक सीमित हैं। लेखकों को छापकर उन्हें ह्यकृपाह्ल का अनुभव कराया जाता है, परंतु सम्मानजनक मानदेय नहीं दिया जाता। अब कुछ मालिकान पुरस्कार योजनाएं बनाकर लेखक-सम्मान का दिखावा कर रहे हैं, जबकि बुनियादी जरूरत है – श्रम का मूल्य और साहित्य की जगह। लेखन कोई शौक नहीं, गहन परिश्रम है, जिसे मजूरी और मान चाहिए। पुरस्कार बाद में दीजिए, पहले लेखक को उसका मेहनताना दीजिए – यही सबसे बड़ा सम्मान होगा।

अखबारों में साहित्य की हत्या और शब्दकर्मियों की बेइज्जती

कभी अखबारों के साहित्यिक पृष्ठों को देश की आत्मा कहा जाता था। वहां सिर्फ खबरें नहीं होती थीं, बल्कि विचार, विवेक और संवेदना की साझी विरासत सांस लेती थी। लेकिन आज जब हम अखबार पलटते हैं, तो खबरें हैं, विज्ञापन हैं, राजनेताओं के प्रवचन हैं, पर कविता, कहानी, ललित निबंध, समीक्षा और विचारधारा का साहित्यिक पक्ष गायब है।

बड़ी विडंबना है कि जो मीडिया ह्यप्रेस की स्वतंत्रताह्ल और ह्यअभिव्यक्ति की आजादीह्ल का झंडा उठाए घूमता है, उसी ने अपने सबसे जरूरी हिस्से झ साहित्य और साहित्यकारों को हाशिए पर धकेल दिया है। अखबारों से साहित्यिक पन्ने चुपचाप गायब कर दिए गए, और जो कुछ बचे हैं, उनमें भी केवल खानापूरी चल रही है।

लिखने वाले बचे हैं, पर छापने वाला कौन?

आज भी भारत में हजारों लेखक, कवि, निबंधकार, विचारक अपने मन की बात समाज तक पहुंचाना चाहते हैं। पर उन्हें जगह कहां मिलती है? अगर आप किसी अखबार में साहित्यिक लेख भेजें तो या तो 'संपादक व्यस्त हैं' का जवाब मिलेगा, या कोई जवाब ही नहीं। जवाब मिला तो यह नहीं मालूम कि वह अस्वीकृति है या केवल औपचारिकता। और अगर छप भी गया – तो मानदेय? वो तो जैसे गाली मांग ली हो! कई अखबार बिना एक पैसा दिए लेखकों से नियमित सामग्री प्रकाशित करते हैं। और कुछ जगहों पर तो एक ऐसी व्यवस्था है जिसे लेखक-शोषण का मॉडल कहा जा सकता है – छप कर खुश हो जाइए, पैसे का सवाल मत उठाइए।

**लेखकों का मानदेय नहीं,
मगर मालिकान पुरस्कार देंगे!**

अब सुनिए ताजा तमाशा –कुछ मीडिया संस्थान अब 'लेखकों को पुरस्कार' देने की योजना बना रहे हैं। वाह! आप पहले लेखकों से मुफ्त में लेख लिखवाते हैं, फिर उन्हें छपने के बदले में 'कृपा' समझते हैं, और अब पुरस्कारों का चारा डालकर आत्मसम्मान की हत्या कर रहे हैं। माना कि पुरस्कारों की परंपरा साहित्य में पुरानी है। लेकिन जब ये पुरस्कार उन हाथों से आने लगें जो लेखकों को रचनात्मक मजदूर नहीं, उपयोग की वस्तु समझते हैं, तो सवाल उठते ही हैं। क्या पुरस्कार उस संस्था की ओर से आना चाहिए जो मानदेय देने तक को बोझ समझती है?

'साहित्यिक पृष्ठ' अब सिर्फ रस्म अदायगी

अखबारों में बचे हुए जो साहित्यिक कॉलम हैं, वे भी आज क्लबबाजी, गुटबाजी और व्यक्तिगत संबंधों की राजनीति के अड्डे बन चुके हैं। कुछ खास नामों को ही बार-बार छापा जाता है। नये लेखकों को तो जैसे इंट्री ही नहीं। मानदेय के नाम पर महीने भर बाद फोन घुमाइए, मेल भेजिए, और फिर भी... ह्लआपका भुगतान प्रक्रिया में हैह्ल। कभी 'धर्मयुग', 'साप्ताहिक हिंदुस्तान', 'कादम्बिनी', 'नवभारत टाइम्स' जैसे स्तम्भ साहित्य की आवाज थे। आज तो ह्यसाहित्यह्ल शब्द से ही कुछ संस्थानों को एलर्जी हो गई है।

**शब्दकर्मी भी मजदूर हैं,
सिर्फ माइक वाले नहीं**

पत्रकारिता में कैमरामैन, रिपोर्टर, एंकर, डिजाइनर सभी को वेतन मिलता है। लेकिन लेखकों को अब भी 'हवा का प्राणी' माना जाता है – उन्हें केवल सम्मान की तसल्ली चाहिए, पैसे की नहीं। यह सोच गहरी असंवेदनशीलता की परिचायक है।

लेखक कोई शौकिया कलाकार नहीं है, वह समय, श्रम, अध्ययन और संवेदना की मिट्टी से रचना करता है। उसकी लेखनी समाज को दिशा देती है, जनचेतना जगाती है। फिर उसे मजदूरी देने में कंजूसी क्यों?

**क्या आप पत्रकारिता को
बिना विचार के चलाना चाहते हैं?**

आज का अखबार कॉर्पोरेट और सत्ता के गठजोड़ का माध्यम बनता जा रहा है। लेकिन जो लोग अखबारों को पढ़ते हैं, वे केवल हादसे, घोटाले और राजनीति नहीं चाहते – वे चाहते हैं वो दृष्टिकोण, जो उन्हें सोचने के लिए मजबूर करे। और यह काम साहित्य और विचारधारा ही कर सकती है। साहित्य न हो तो अखबार सिर्फ 'सूचना का कूड़ाघर' बन जाएगा। सोचिए – अगर समाज को दिशा देने वाला साहित्य गायब कर दिया गया, तो आप सूचना की भीड़ में विचारों की कब्रगाह ही तो बना रहे हैं।

सम्मान तब जब श्रम की कीमत दी जाए

यदि आप लेखक को हम आपको सम्मानित करेंगे कह रहे हैं, तो पहले यह भी सुनिश्चित कीजिए कि आप उसे समय पर भुगतान दे रहे हैं या नहीं, उसकी रचना को संपादित किए बिना तोड़-मरोड़ तो नहीं रहे, और उसे केवल ह्यभरावह्ल का साधन तो नहीं बना रहे। सम्मान का सबसे पहला रूप होता है - श्रम का मूल्य। बाकी पुरस्कार, ट्रॉफी, सर्टिफिकेट, मंच – सब बाद में आते हैं।

एक अपीलः शब्द का मूल्य जानिए

जो अखबार अपने शब्दकर्मियों को मजदूरी नहीं दे सकते, उन्हें साहित्य के नाम पर आयोजन करने का नैतिक अधिकार नहीं है। यदि आप लेखक हैं, तो बिना मानदेय के रचना देना बंद कीजिए। खुले मंचों पर यह सवाल उठाइए कि साहित्य की जगह कहां है। और जो संस्थान आपको सिर्फ ह्लछपने की खुशीह्ल देते हैं, उनसे यह पूछिए – क्या यही लेखक का सम्मान है?

मीडिया की रीढ़ सिर्फ ब्रेकिंग न्यूज नहीं होती।

मीडिया की आत्मा वो विचार होते हैं, जो समाज को सजग बनाते हैं। और ये विचार आते हैं लेखकों, कवियों, चिंतकों, निबंधकारों की कलम से। अगर आपने उनकी कलम से मान देना बंद कर दिया, तो एक दिन वही कलम आपके विज्ञापन-आधारित अखबारों की पोल खोल देगी।

घूँघट की बगावत

03 अगस्त 2025

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित
हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

राष्ट्रीय पुरस्कार कला और सिनेमा के प्रति मेरे समर्पण को मान्यता : रानी मुखर्जी

बॉलीवुड अभिनेत्री रानी मुखर्जी ने मिसेज चटर्जी वर्सेज नॉर्वे में दमदार अभिनय के लिए शुक्रवार को अपने करियर का पहला राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता। रानी ने कहा कि यह पुरस्कार न केवल उनके तीन दशक के फिल्मी करियर को, बल्कि कला और सिनेमा के प्रति उनके समर्पण को मिली मान्यता का प्रमाण है। उन्होंने कहा, मैं मिसेज चटर्जी वर्सेज नॉर्वे में निभाए गए किरदार के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार पाकर बेहद खुश हूं। संयोग से, यह मेरे 30 साल के फिल्मी करियर का पहला राष्ट्रीय पुरस्कार है। एक अभिनेत्री के रूप में, मैं भाग्यशाली रही हूं कि मेरे खाते में कुछ बेहद शानदार फिल्में शामिल हैं और मुझे उनके लिए बहुत प्यार मिला है। मैं मिसेज चटर्जी वर्सेज नॉर्वे में मेरे अभिनय को सम्मानित करने के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जूरी का आभार व्यक्त करती हूं। उन्होंने बताया कि मेरे लिए यह पुरस्कार मेरे 30 वर्षों के करियर, कला के प्रति मेरे समर्पण, जिसके साथ मैं गहरा आध्यात्मिक जुड़ाव महसूस करती हूं, और सिनेमा तथा हमारे इस खूबसूरत फिल्म उद्योग के प्रति मेरे जुनून को मिली मान्यता है।

अभिनेत्री और निर्माता श्वेता त्रिपाठी ने किया स्वानुभवों को साझा

'प्रोड्यूसर बनना सीखने की एक प्रक्रिया है और मैं इस सफर के लिए तैयार हूं'

मुंबई। अभिनेत्री और निर्माता श्वेता त्रिपाठी ने अपनी नई प्रोडक्शन कंपनी 'बंदरफुल' शुरू करने के पीछे की प्रेरणा और फिल्म इंडस्ट्री में अपने अनुभवों को साझा किया। श्वेता ने बताया कि उन्होंने हमेशा इंडस्ट्री में अपनापन महसूस किया और अब वह दूसरों को मौका देना चाहती हैं। श्वेता ने बताया कि उन्हें यह कभी नहीं लगा कि वह इंडस्ट्री के बाहर से हैं; उन्हें यहां हमेशा अपनापन महसूस हुआ।

श्वेता ने अपनी प्रोडक्शन कंपनी शुरू करने के बारे में कहा, क्यों इंतजार करें कि कोई और कहानी को सामने लाए? बहुत सारी कहानियां और प्रतिभाशाली लोग हैं। मैं ऐसे लोगों को जानती हूं और अगर मेरे पास संसाधन हैं, तो मैं उन्हें मौका देना चाहती हूं।

उन्होंने कहा कि वह अपने सफर में कई लोगों से मिलती हैं और कुछ कहानियां उन्हें बहुत प्रभावित करती हैं। श्वेता ने बताया, मैं चाहती हूं कि दुनिया भी इन्हें महसूस करे। इसलिए मैंने अपनी प्रोडक्शन कंपनी शुरू की। दूसरों पर उंगली उठाने से पहले हमें खुद से पूछना चाहिए कि हम उनके लिए क्या कर रहे हैं।

'बंदरफुल' प्रोडक्शन हाउस का उद्देश्य ऐसी कहानियों को बढ़ावा देना है जो रूढ़ियों, व्यावसायिक दबावों या सामाजिक बंधनों से मुक्त हों। श्वेता ने कहा, ह्लमुझे खुशी है कि लोगों ने मुझ पर भरोसा किया। फिल्ममेकर्स ने मेरी प्रतिभा और पैशन को देखा। अब मैं दूसरों में वह जुनून देखना चाहती हूं और उन्हें मंच देना चाहती हूं।

उन्होंने कहा कि वह उन लोगों के साथ काम करना चाहती हैं जो सिनेमा और ऐसी कहानियों के प्रति जुनूनी हों जो समाज पर प्रभाव डाल सकें।

इंडस्ट्री के अपने अनुभव को साझा करते हुए श्वेता ने कहा, ह्लमुझे शुरू से ही गुनीत मोंगा, अनुराग कश्यप और करण जौहर जैसे लोगों का साथ मिला। मैंने कभी खुद को बाहरी नहीं माना। मेरे लिए यह सब भावनाओं और जुड़ाव के बारे में है, न कि जेंडर, जाति या वर्ग के बारे में। प्रोड्यूसर बनने के अनुभव को श्वेता ने एक नया सफर बताया। उन्होंने बताया, प्रोड्यूसर बनना एक सीखने की प्रक्रिया है। हर कदम मुझे कुछ नया सिखा रहा है और मैं इस सफर के लिए तैयार हूं।

सामाजिक असमानताओं को प्रदर्शित करती सिद्धांत चतुर्वेदी और तृप्ति डिमरी की प्रेम कहानी

धड़क का आखिरी सीन याद है, जहाँ जान्हवी कपूर की खामोश चीख आपको सिहरन से भर देती है? 'धड़क 2' में, निमार्ता क्लाइमेक्स में तृप्ति डिमरी की जोरदार चीख का सहारा लेते हैं। हालाँकि पर्दा गिरने के बाद भी यह चीख गूंजती है, लेकिन इसका असर लगभग वैसा ही रहता है। शाज़िया इकबाल द्वारा निर्देशित यह फि ल्म जाति-आधारित अत्याचारों से साहस के साथ निपटने की कोशिश करती है, लेकिन दृढ़ विश्वास के साथ नहीं। मूल 'परियेरुम पेरुमल' के विपरीत, यह विषय की माँग के अनुसार तीखी और निडर टिप्पणी करने से बचती है। जो एक सशक्त राजनीतिक बयान हो सकता था, वह एक कमजोर कहानी बन जाता है, जिसे सेंसरशिप या विवाद से बचने के लिए नरम किया गया लगता है। क्लाइमेक्स के संवादों को फिर से डब करने से बेचैनी और बढ़ जाती है। फिर भी, सिद्धांत चतुर्वेदी ने जातिगत शर्म और उत्पीड़न के बोझ तले घुटते एक युवक नीलेश का किरदार निभाते हुए अब तक का अपना सर्वश्रेष्ठ अभिनय दिया है। विधि के रूप में तृप्ति डिमरी ने 'लैला मजनू' वाली अपनी रोमांटिक तीव्रता को वापस लाया है, जो कई दृश्यों में सिद्धांत के जोश से मेल खाती है।

कहानी

धड़क2 की शुरूआत नीलेश (सिद्धांत चतुर्वेदी) के एक शादी में ढोल बजाने से होती है, जहाँ विधि (तृप्ति डिमरी) भी मौजूद होती है। वह न सिर्फ.उसे देखती है, बल्कि उसका नंबर भी माँगती है। ज्यादा मत सोचिए; यह उसकी बहन की शादी में बैंड के परफॉर्मेंस के लिए है। फि ल्म में सिर्फ.5 मिनट में ही पता चल जाता है कि नीलेश, जो एक दलित लड़का है, भोपाल के भीम नगर में रहता है और अपनी माँ के सपने को पूरा करने और अपने परिवार का पेट पालने के लिए नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ लॉ में दाखिला लेता है। लेकिन इसमें और भी बहुत कुछ है! एक लड़का जिसका पालतू कुत्ता उसकी आँखों के सामने मारा जाता है, वही लड़का जो अपनी माँ को एक तार्किक सवाल पूछने पर थप्पड़ खाते हुए देखता है, सोचता है कि लॉ कॉलेज में दाखिला लेकर उसकी ज़िंदगी बदल जाएगी। उसकी ज़िंदगी फूलों की क्यारी बन जाएगी, और वहाँ से निकलकर, वह अपने परिवार के लिए नाम कमाएगा और उनकी मुश्किलें खत्म करेगा। लेकिन उसे क्या पता था कि असली संघर्ष अब शुरू होने वाला है। कॉलेज में उसकी मुलाकात उसी लड़की से

लेखकों ने सिद्धांत के लिए एक मजबूत और साथ ही कमजोर भूमिका तैयार की है। फिल्म में त्रिप्ति भी विधि के रूप में हैं, जो लॉ कॉलेज में है, लेकिन इतनी अज्ञानी है कि उसके पास तार्किक तर्क नहीं है और वह भ्रमित है, जैसे कोई भी विशेषाधिकार प्राप्त व्यक्ति पैदा होता है। लेकिन उसके पास एक दयालु हृदय है, जो सभी को एक के रूप में देखती है, उसकी अपनी आवाज है और वह अपने अंदर उन्हें थामे रखने की ताकत महसूस करती है।

होती है। वही लड़की उसे अपने से अलग नहीं समझती और उसके साथ दया से पेश आती है। हालाँकि विधि वकीलों के परिवार से आती है, उसका एक चचेरा भाई और चाचा भी है जो जातिगत भेदभाव में गहरी आस्था रखते हैं, लेकिन इन सबके बावजूद, दोनों के बीच प्यार पनपता है, ठीक वैसे ही जैसे फिल्म में बोगनविलिया के इस्तेमाल से होता है। लेकिन जहाँ ये दोनों मिलते हैं और उनके दिल पहले से कहीं ज्यादा तेजी से धड़कने लगते हैं, वहीं एक अलग लेकिन ज्यादा दूर नहीं, दुनिया में, सौरभ सचदेवा एक निर्दयी, बेरहम आदमी के रूप में हैं, जो अनुसूचित जाति के लोगों को परजीवी समझता है और उन्हें मारने में जरा भी आँसू नहीं बहाता। जब उसकी नीलेश से टक्कर होती है, तो क्या होता है, और क्या विधि का परिवार उनके रिश्ते को स्वीकार करता है? क्या धड़क 2 का हश्र भी जान्हवी कपूर और ईशान खट्टर की धड़क जैसा होता है? खैर, इन सवालों के जवाब जानने के लिए आपको फिल्म देखनी होगी।

नीलेश के रूप में सिद्धांत चतुर्वेदी ने अविश्वसनीय अभिनय किया है। उनकी आँखें और उनका व्यवहार साफ तौर पर दशार्ता है कि वे नीलेश को जी रहे हैं, एक ऐसा दलित जो अपने और अपने समुदाय के लिए मुक्ति की तलाश में है। नीलेश को कॉलेज की उस सर्वव्यापी राजनीति का हिस्सा बनने के बजाय वकील बनने का जुनून है, जो यहाँ जातिगत भेदभाव की भी बात करती है, और हम उनके अभिनय में एक निजी जुनून देखते हैं। तृप्ति डिमरी उन सभी संशयवादियों को गलत साबित करती हैं जो मानते हैं कि वह सिर्फ.एक ग्लैमर गर्ल हैं। बिल्कुल स्वाभाविक, वह विधि के रूप में चौंका देती हैं, एक तेजतर्रार लड़की जो खुद को अरुचिकर सामाजिक परंपराओं के कारण मानसिक रूप से घुटन महसूस करती है। नीलेश के पिता के रूप में विपिन शर्मा बेहतरीन हैं, खासकर जब रॉनी और उसके दोस्त उन्हें परेशान करते हैं। नीलेश की माँ के रूप में अनुभा फतेहपुरा भी कमाल की हैं, और एक साधारण भूमिका में, विधि के पिता के रूप में हरीश खन्ना चुपचाप प्रभावशाली हैं। सौरभ सचदेवा एक बार फिर कट्टर शंकर के रूप में अपनी क्षमता का परिचय देते हैं।

युवा कलाकारों में, वासु के रूप में आदित्य ठाकरे और शेखर के रूप में प्रियांक तिवारी, सबसे अलग नजर आते हैं। लेकिन सहायक कलाकारों में, मुख्य भूमिका में जाकिर हुसैन का जलवा कायम है, जो हास्य और नाटकीयता का अद्भुत संगम प्रस्तुत करते हैं।

लेखन और निर्देशन

लेखक राहुल बडवेलकर और शाज़िया इकबाल ने एक ऐसी फि ल्म बनाने में अद्भुत काम किया है जो किसी को खुश करने के लिए नहीं है। यह फिल्म, जिसका उद्देश्य निचली जाति के लोगों की दुर्दशा को उजागर करना है, पूरी प्रामाणिकता के साथ ऐसा करती है। जहाँ विशेषाधिकार प्राप्त लोगों को विशेषाधिकार प्राप्त कहा जाता है, वहीं भ्रमित लोगों को अज्ञानी कहा जाता है। फि ल्म और लेखक किसी को खुश करने के लिए नहीं झुकते, न ही किसी को खुश करने के लिए और न ही उस ठेठ बॉलीवुड अंत के झाँसे में आने के लिए, जो कहता है, आखिर में सब सही हो जाता है दोस्तों और अगर नहीं हुआ तो वो अंत नहीं है। लेखकों ने सिद्धांत के लिए एक मजबूत और साथ ही कमजोर भूमिका तैयार की है। फिल्म में त्रिप्ति भी विधि के रूप में हैं, जो लॉ कॉलेज में है, लेकिन इतनी अज्ञानी है कि उसके पास तार्किक तर्क नहीं है और वह भ्रमित है, जैसे कोई भी विशेषाधिकार प्राप्त व्यक्ति पैदा होता है। लेकिन उसके पास एक दयालु हृदय है, जो सभी को एक के रूप में देखती है, उसकी अपनी आवाज है और वह अपने अंदर उन्हें थामे रखने की ताकत महसूस करती है।

जिंदगी में कुछ मोड़ ऐसे आते हैं जहां इंसान को अपना रास्ता बदलना पड़ता है। क्या आपने कभी सुना है कि एक ऐसी अभिनेत्री भी थी जिनकी खूबसूरती से उस दौर की बड़ी-बड़ी हसीनाएं भी जलती थीं। उन्होंने तो यहां तक कि प्रेमनाथ और जीतेन्द्र जैसे दिग्गजों पर जबरदस्ती का आरोप लगाया जब उन्हें कहीं भी इंसाफ की उम्मीद न जर नहीं आई तो उन्होंने चका चौंध भरी बालीवुड की दुनिया को हमेशा के लिए अलविदा कह दिया। आज शायद ही कोई जानता होगा कि वह अभिनेत्री कहां है लेकिन यहां पर एक ऐसी ही अभिनेत्री के विषय विचार करना-चाहते हैं जिनका नाम है – फरियाल।

'प्यार करते हो यार कर के डरते हो यार, लो मेरा प्यार ले लो सारी बहार ले लो'

प्यार करते हो यार कर के डरते हो यार। लो मेरा प्यार ले लो सारी बहार ले लो जैसे गीतों पर थिरकने वाली फरियाल जिनका पूरा नाम फरियाल मनमोहन था। उनके व्यक्तिगत जीवन के विषय में बहुत कम लोग जानते हैं। पर, हां इतना जरूर कहा जाता है कि उनके पिता भारतीय मूल के थे और उनकी माता सीरिया से थी। नवंबर 1945 को सीरिया के दमिश्क शहर में उनका जन्म हुआ लेकिन उनका बचपन और परवरिश भारत में ही बड़े पारंपरिक तौर-तरीकों के साथ हुई। शिमला के कान्वेंट स्कूल में, प्रारंभिक शिक्षा के बाद वह सपनों की नगरी मुंबई आईं। यहां सेंट जेवियर कालेज से उन्होंने अपने ग्रेजुएशन (स्नातक) को पूरा किया। उस जमाने में फरियाल की खूबसूरती की तुलना अभिनेत्री सायरा बानो से की जाती थी। क्योंकि वह इतनी मोहक दिखती थी। आपनी इस नैसर्गिक सुंदरता के साथ उन्होंने पहले एअर होस्टेस बनने का सपना देखा लेकिन शायद किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। वह इस पेशे में ज्यादा दिन नहीं रुक पाई और जल्दी ही उनका झुकाव अभिनय की तरफ हो गया। उनके परिवार में कोई फिल्म इंडस्ट्री से नहीं था। फरियाल ने फिल्म में आने के लिए फिल्मालय स्टूडियो के एक्टिंग स्कूल में दाखिला लिया। अभिनय सीखने की उनकी लगन रंग लाई और बहुत ही कम समय में ही वे बड़े पर्दे पर नजर आने लगीं। कहा जाता है कि कई बार हालात इंसान को एक ऐसे रास्ते पर ढकेल देते हैं जहां वह जाना नहीं चाहता। कुछ ऐसा हो फरियाल के साथ हुआ। उनकी काया और संवाद बोलने का अंदाज इतना आकर्षक था कि हर फिल्मकार उन्हें वैंप (यानी निगेटिव या ग्लैमरस किरदारों में ही देखने लगा था। सच कहा जाए तोजाए तो उन्हें कैबरेट डांस और ऐसे वैंप वाले रोल बिल्कुल पसंद नहीं थे। वह ऐसी भूमिकाओं से नफरत करती थीं लेकिन उनके पास इन किरदारों के अलावा और डु कोई विकल्प भी नहीं था। बावजूद इसके, फरियाल ने अपने हर भूमिका में अपनी

हर भूमि का ये एक अलग छाप छोड़ी और अपनी स्क्रीन प्रेजेंस से दर्शकों को बांधे रखा । इसलिए फरियाल ने हर मिले हुए किरदार को निभाया चाहे वह उनकी पसंद का हो या न हो। इसी दरम्यान उन्होंने

मॉडलिंग की दुनिया में भी अपनी पहचान बनाई।

एक्टिंग स्कूल से निकलने के बाद उनकी पहली फिल्म बिरादरी थी जो 1966 में रिलीज हुई। यह फिल्म भले ही बॉक्स आफिस पर नहीं चली लेकिन उन्हें अभिनेता शशि कपूर का साथ मिला बिरादरी बतौर लीड एक्ट्रेस फरियाल की पहली फिल्म थी हालांकि उससे पहले 1965 में उनकी एक और फिल्म जिंदगी और मौत रिलीज हो चुकी थी। इस फिल्म को मशहूर अभिनेता

और खलनायक निसार अहमद ने निर्देशित किया था। यह उस साल की हिट फिल्मों में से एक थी और इस फिल्म में अब नेता प्रदीप कुमार के साथ फरियाल का एक गाना - दिल लगाकर हम ये समझें काफी मशहूर हुआ था। जिंदगी और मौत की सफलता के बाद फरियाल के पास ऑफर की बाढ़ आ गई। उनकी तीसरी फिल्म ज्वेलथीफ' (1967) उनके फिल्मी

करियर में एक बड़ा मोड़ साबित हुई थी लेकिन इस फिल्म का कैबरे डांस इतना ज्यादा मशहूर हुआ कि फिल्मकारों ने पारियाल को एक डांसर के की नजर से देखना शुरू कर दिया। इसके बाद 1970 की सच्चा झूठा, 1972 को लोफर शम्मी कपूर निर्देशित फिल्म

मनोरंजन और 1975 की रफू चक्कर जैसी फिल्मों में फरियाल छोटे बड़े किराये में खूब छाई रहीं। 60 के दशक से लेकर 70 के दशक तक वह बातौर कैबरे और वैंप गर्ल के किरदार में चर्चा का विषय बनी रहीं। कुछ पत्रिकाओं ने तो उन्हें फिल्म जगत भी सेक्स

सिंबल तक कह डाला था। छोटे कपड़े पहनकर ऐसे टाइप्ड कास्ट भूमिका को निभाना मानो यही उनकी

नियति बन गई थी। एक साक्षात्कार दौरान फरियाल ने अपने दिल की बात कहीं थी कि उन्हें कैबरे डांस बिल्कुल पसंद नहीं था। उन्होंने कभी डांस की ट्रेनिंग भी नहीं ली थी। ये किरदार उनसे जबरदस्ती करवाए जाते थे। साक्षात्कार में उन्होंने अपने मन की बात

लोगों के सामने बड़ी बेबाकी के साथ कही थी। फरियाल की खूबसूरती का अंदाजा और इसी बात से लगा सकते हैं कि एक फिल्म की शूटिंग के दौरान एक जानी मानी हीरोइन ने उनसे कहा था कि तुम सबसे ज्यादा खूबसूरत दिख रही हो अपना कास्ट्यूम चेंज कर लो। इतना ही नहीं शत्रुघ्न सिन्हा की फिल्म हीरा की शूटिंग के दौरान बाकी एक्ट्रेस में निर्देशक से बात करके उन्हें अच्छे गाने खुद पर फिल्माने को कहा था ताकि फरियाल को कम तवज्जो मिल सके।

कैरियर के इसी पड़ाव पर फिरोज खान ने अपनी फिल्म अपराध में उन्हें एक ग्लैमरस 2 लाख रुपए किया था। यह फिरोज खान की पहली फिल्म थी जिस-ाके वे प्रोड्यूसर-डायरेक्टर थे। फरियाल इस फिल्म में एक बात का सीन दिया था और इसके बाद तो उनकी किस्मत पर वैंप वाले दृश्यों की ऐसी मोहर लगी फिर उन्हें सीधी सादी चारित्रिक भूमिका मिल ही नहीं पाईं। उन्हें लगातार डांस ग्लैमर डांस विदेशी भूमिका ही मिलती रहीं।

यह कितनी विडंबना है कि डांस करना उन्हें ना पसंद था और उन्होंने कभी सीखा सीखा भी नहीं था फिर भी यह उनके करियर का एक बड़ा हिस्सा बन गया। पसंद-नापसंद के बीच फरियाल का करियर आगे बढ़ता रहा लेकिन 1980 का दशक रखता होते-होते उन्हें फिल्मों ऑफर्स खत्म होने लगे। कई ऐसी अभिनेत्रियों की तरह जिन्हें एक खास इमेज में बांध दिया जाता है फरियाल को भी आपने इस टाइप कास्टिंग का खामियाजा भुगतना पड़ा जब नये दौर में उनके लिए रोल खत्म होते गए। यूं तो फरियाल के जीवन से जुड़ी अनेक कहानियां हैं उन्हें हमेशा इस बात का दुःख रहा है कि उन्हें एक ही तरह के किरदार में बांधा गया। एक साक्षात्कार में उन्होंने अपनी जिंदगी की तुलना अभिनेत्री बिंदू से की थी। फरियाल का कहना था कि बिन्दु बेहद खुबसूरत अभिनेत्री थीं फिर भी उन्हें लीड अभिनेत्री का किरदार नहीं मिला। इसी साक्षात्कार के दौरान उन्होंने एक सवाल पूछा कि क्या एक खूबसूरत लड़की कभी अभिनेत्री नहीं बन सकती।

फरियाल की मुश्किल परिस्थितियों का अंत 1984 में हुआ लेकिन इसके लिए उन्हें अपने फिल्मी करियर को पूरी तरह से रोकना पड़ा जितेन्द्र की फिल्म द गोल्ड मेडल एक सीन के दौरान फरियाल को महस-ूस हो गया कि अभिनेता प्रेमनाथ उन्हें छेड़ रहे हैं। शॉट इस प्रकार था जिसमें प्रेमनाथ को फरियाल के साथ जबर दस्ती करनी थी लेकिन फरियाल ने एक इंटरव्यू में बताया गया कि प्रेमनाथ ने उनके साथ सचमुच जबरदस्ती की थी और जीतेन्द्र समेत बाकी कलाकार कैमरे के पीछे खड़े होकर हंस रहे थे। उस घटना का असर यह हुआ की फरियाल ने फिल्मों से अपना नाता हमेशा के लिए तोड़ दिया।

कुछ पत्रकारों ने फरियाल से सवाल किया कि प्रेमनाथ जैसे बड़े और अपने जमाने के सुपरस्टार ऐसा क्यों करना चाहेंगे यह भी ले हो सकता है कि उन्होंने सीन में वास्तविकता लाने के लिए ऐसा किया हो। उस-ाका जवाब देते हुए फरियाल ने शत्रुघ्न सिन्हा की एक फिल्म का उदाहरण देते हुए उन्होने कहा- इसी प्रकार के सीन फिल्माते वक्त शत्रुघ्न साहब ने अपनी मयार्दा का पूरा ध्यान रखा। जो प्रेमनाथ ने नहीं किया। पचास से अधिक फिल्मों में काम कर चुकी अभिनेत्रीः फरियाल आज 79 वर्ष पुरे कर चुकी हैं।

कहा जाता है कि-फिल्मी सफर के दौरान उन्हें कि-सी से प्यार हुआ था। उसी से उन्होंने शादी की थी। अब वह इजरायल में रहती हैं। उनकी कहानी हमें यह बताती है कि पूरी प्रतिभा होने के बावजूद हालात एक कलाकार की राहें किस तरह से बदल देते हैं।

'बॉर्डर 2' की मुख्य भूमिका निभाने के लिए तैयार मेधा राणा

यह फिल्म जेपी दत्ता की 1997 की क्लासिक फिल्म का अगला भाग है। निमार्ताओं ने कैप्शन में लिखा, हर कहानी को उसके लोग मिल जाते हैं। मेधा राणा का स्वागत करते हुए खुशी हो रही है। साहस और देशभक्ति की एक यादगार गाथा के लिए तैयार हो जाइए, क्योंकि बॉर्डर-2 23 जनवरी, 2026 को सिनेमाघरों में आ रही है। इस घोषणा ने प्रशंसकों को उत्साहित कर दिया, वहीं मेधा ने भी इस पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए अपनी कास्टिंग के लिए 'बेहद आभार' व्यक्त किया। वरुण धवन ने अपने इंस्टाग्राम पर यह खबर साझा करते हुए लिखा, मेधा राणा ओटीटी पर अपने काम के लिए जानी जाती हैं, जिसमें अमेजन एमएक्स प्लेयर की 'इश्क इन द एयर', नेटफ्लिक्स की 'फ्राइडे नाइट प्लान' और वूट सीरीज 'लंदन फाइल्स' शामिल हैं। निमार्ता भूषण कुमार ने बताया कि एक आर्मी परिवार से आने वाली मेधा को उनकी क्षेत्रीय बोली और भावनात्मकता के लिए चुना गया है।

उन्होंने कहा, हमारे लिए किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढना बेहद जरूरी था जो स्वाभाविक रूप से उस क्षेत्र की बोली, भावना और मूल सार को अपना सके। मेधा ने न केवल अपनी प्रतिभा से, बल्कि क्षेत्रीय बोली पर अपनी सहज पकड़ और एक अभिनेता के रूप में अपनी भावनात्मक विविधता से भी टीम को प्रभावित किया। मेधा के शामिल होने के बाद, अन्य कलाकारों के बारे में अभी कोई जानकारी नहीं दी गई है। सनी देओल एक भारतीय सेना के सिपाही की अपनी प्रतिष्ठित भूमिका में वापसी करेंगे, जबकि वरुण धवन, अहान शेट्टी और दिलजीत दोसांझ भी प्रमुख भूमिकाओं में होंगे। 'बॉर्डर 2' की शूटिंग अभी चल रही है, जिसमें सनी, दिलजीत और अहान ने अपने शेड्यूल पूरे कर लिए हैं। अनुराग सिंह द्वारा निर्देशित इस फिल्म के निमार्ता भूषण कुमार, कृष्णन कुमार, जेपी दत्ता और निधि दत्ता हैं।

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक पंकज धर द्विवेदी द्वारा जनप्रकाशन प्रेस निकट रीड्स साहब का धर्मशाला से मुद्रित एवं 45, बादशाह बाग, जगन्नाथपुर, गोरखपुर से प्रकाशित।

संपादकः पंकज धर द्विवेदी

संपर्क सूत्र : ghoonghatkibagawat37@gmail.com